खंड 2
सामाजिक प्रसंग में आत्म

खंड 2 सामाजिक प्रसंग में आत्म

इस खंड में दो इकाइयाँ हैं। **पहली इकाई** स्वयं एवं उसकी प्रक्रियाओं से सम्बंधित है। यह धारणा के निर्माण एवं प्रबंधन पर भी चर्चा करती है। दिलचस्प बात यह है कि यह उन रणनीतियों की चर्चा भी करती है जिनकी मदद से आप आत्म प्रस्तुति में वृद्धि कर सकते हैं। इस इकाई में हम पिछली इकाइयों से चल रहे अपने विवरण को जारी रखते हुए आगे बढ़ेंगे। लेकिन, यहाँ हम इन प्रक्रियाओं की संज्ञानात्मकता और गतिशीलता की खोज करेंगे एवं सबसे प्रासंगिक प्रश्न का अध्ययन करेंगे – हमारी सामाजिक धारणाएँ एवं व्यक्ति की धारणाएँ किस हद तक सटीक हैं? क्या इन प्रक्रियाओं में ऐसी त्रुटियाँ, पूर्वाग्रह, एवं ग़लत व्याख्याएँ हैं जो सामाजिक दुनिया की हमारी वास्तविक समझ को प्रभावित करती हैं? आम व्यक्ति की भाषा में, क्या हम उस जानकारी पर विश्वास कर सकते हैं जो हमने धारणा निर्माण, विशेषताओं, एवं सामाजिक वर्गीकरण से इकट्ठा की हैं? यदि नहीं तो हम इस विषय में क्या करते हैं।

खण्ड की **दूसरी इकाई** समाज की संप्रत्यय के साथ–साथ समाज एवं व्यक्ति के व्यवहार पर समाज के प्रभावों की चर्चा करता है। हमारे सम्पूर्ण जीवनकाल में हमारी धारणाओं, अभिवृत्तियों, एवं व्यवहार का आकार निर्धारण एवं उनका नियंत्रण समाज एवं संस्कृति पर निर्भर करता है। लोगों द्वारा अपने समाज और परिवार में बनाने वाले बंधनों एवं सम्बन्धों के प्रकार एवं प्रकृति उनके लिए विशेष होती है। समाज में पाई जाने वाली ऐसी भिन्नता के लिए हम बहुधा उनकी संस्कृति की भिन्नता को उत्तरदायी मानते हैं। इस इकाई में आप संस्कृति की संप्रत्यय, संस्कृतिग्राह्यता एवं संस्कृति–संक्रमण की प्रक्रिया के साथ व्यक्तिवादी एवं समष्टिवादी समाज के विषय में भी जानकारी प्राप्त करेंगे। इकाई के अंत तक आपको व्यक्ति की अनुभूति एवं कार्यों पर पड़ने वाले संस्कृति के प्रभावों की जानकारी भी प्राप्त होगी।

इकाई 3 आत्म एवं संबंधित प्रक्रिया*

इकाई की रूपेरखा

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 आत्म–संप्रत्यय

3.2.1 आत्म–संप्रत्यय का निर्माण

3.2.2 आत्म–सम्मान

3.2.3 आत्म–सक्षमता

3.3 सामाजिक और व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण के संज्ञानात्मक और प्रेरणादायक आधार

3.3.1 छवि निर्माण एवं प्रबंधन

3.3.2 छवि प्रबंधन

3.3.3 आत्म–प्रस्तुति के सिद्धांत

3.3.4 आत्म–प्रस्तुति की रणनीतियाँ

3.3.4.1 चाटुकारिता

3.3.4.2 धमकी

3.3.4.3 आत्म–प्रचार

3.3.4.4 दृष्टांत

3.3.4.5 याचना

3.3.5 आत्म–प्रस्तुति में व्यक्तिगत अंतर

3.4 सारांश

3.5 इकाई अंत प्रश्न

3.6 शब्दावली

3.7 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

3.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात्, आप समर्थ होंगे:

- आत्म एवं आत्म–सम्मान की धारणा की व्याख्या करने में;
- आत्म–सक्षमता की विभिन्न विशेषताओं की पहचान करने में;
- छवि निर्माण की गतिशीलता का विश्लेषण करने में; तथा
- आत्म–प्रस्तुति के सिद्धांतों एवं रणनीतियों की व्याख्या करने में।

3.1 परिचय

पिछली इकाई में हमने सामाजिक संज्ञान का अध्ययन किया– दूसरों के व्यवहार को जानने, समझने एवं उसकी भविष्यवाणी करने की एक प्रक्रिया है। सामाजिक संज्ञान में दो बुनियादी प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, और वे हैं सामाजिक धारणा एवं व्यक्ति की

* डॉ. अरी सूदन तिवारी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ रोड़, तिमारपुर, दिल्ली

धारणा। सामाजिक धारणा के तहत हमने सामाजिक धारणा के विभिन्न तंत्रों का अध्ययन किया था– अमौखिक संचार, लक्षण, प्रभाव निर्माण एवं अन्तर्निहित व्यक्तित्व सिद्धान्त। व्यक्ति की धारणा में हमने जिन तंत्रों का अध्ययन किया वे भौतिक संकेत, योजना (स्कीम), स्वानुभाविक शोध प्रणाली (heuristics), निर्माण एवं सामाजिक वर्गीकरण थे। यहाँ हमने सामाजिक एवं व्यक्ति की धारणा के संरचनात्मक तथा कार्यात्मक पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया था। इस इकाई में हम पिछली इकाई के अपने विवरण को जारी रखते हुए आगे बढ़ेंगे। लेकिन यहाँ हम इन प्रक्रियाओं के संज्ञानात्मक पहलू एवं गतिशीलता का पता लगाएँगे एवं सबसे अधिक प्रासंगिक प्रश्न का अध्ययन करेंगे – हमारी सामाजिक धारणाएँ एवं व्यक्ति की धारणाएँ किस सीमा तक सटीक हैं? क्या ये प्रक्रियाओं में त्रुटियाँ, पूर्वाग्रह एवं ग़लत व्याख्याएँ हैं जो सामाजिक दुनिया की हमारी वास्तविक समझ को प्रभावित करती हैं? आम व्यक्ति की भाषा में, क्या हम उन सूचनाओं पर विशवास कर सकते हैं जो हमने धारणा निर्धारण, आरोपण तथा सामाजिक वर्गीकरण द्वारा एकत्रित की हैं? यदि नहीं तो हम इस संबंध में क्या करते हैं।

3.2. आत्म–संप्रत्यय

यह हमारे बारे में हमारी समझ को दर्शाता है। यह इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि वह अपने विषय में क्या सोचता/सोचती है। प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं के बारे में एक आत्म–संप्रत्यय होती है जिनमें उन विशेषताओं का समावेश होता है जिसे वे अपने लिए महत्वपूर्ण मानते हैं एवं जो उनकी पहचान होती हैं। यह हमारी क्षमताओं, प्रकृति, व्यक्तित्व, तथा अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं से सम्बंधित है जो हमें यह परिभाषित करने में मदद करता है कि हम कौन हैं। इसके अलावा, हमारी आत्म–अवधारणा परिस्थितियों, पर भी निर्भर करती हैं, यानी कि, हम विभिन्न परिस्थितियों में अलग अलग प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं। उदाहरण के लिए, आप जिंदादिल, साहसी, खिलाड़ी, अच्छे नेता की तरह जाने जा सकते हैं अथवा पारंपरिक, कम आत्मविश्वास वाले, इत्यादि की तरह। किसी संगठन, सदस्यता, संस्कृति, अथवा परिवार के साथ जुड़ी हमारी पहचान भी हमारी आत्म–अवधारणा का एक भाग है।

3.2.1 आत्म–संप्रत्यय का निर्माण

आत्म–अवधारणा की हमारी परिभाषा हमारे अनुभवों एवं अन्य लोगों के साथ होने वाली बातचीत के माध्यम से विकसित होती है। कुछ सिद्धान्तकारों ने आत्म–संप्रत्यय के विकास की प्रक्रिया के विषय में कुछ व्याख्या की है, उनमें से कुछ को इस प्रकार समझाया जा सकता है:

- **आत्म दर्पण**

आत्म–दर्पण के अनुसार, हम अपनी आत्म–छवि एवं अवधारणा का निर्माण इस आधार पर करते हैं कि दूसरे हमारे विषय में क्या सोचते हैं। अतः आत्म–अवधारणा हमारे प्रति दूसरों की प्रतिक्रियाओं एवं हमारी इस सोच कि दूसरे लोग हमें कैसे देखते हैं के माध्यम से विकसित होती है। जैसे कि, यदि आपका कोई मित्र कहता है – "आप बहुत उदार हैं" तथा साथ ही ऐसे और भी मौक़े आए हैं जब लोग आपके पास अपनी समस्याओं पर चर्चा करने आए हैं, तो ये सामूहिक विचार आपके भीतर भावनात्मक

प्रतिक्रियाओं का आह्वान करते हैं और आपकी आत्म–अवधारणा में परोपकार की विशेषता जुड़ जाती है।

- **सामजिक तुलना सिद्धान्त**

इस सिद्धान्त के अनुसार स्वयं की तुलना दूसरों के साथ करने से आत्म–अवधारणा का विकास होता है। हम दो आयामों के आधार पर अपनी तुलना एवं मूल्यांकन दूसरों के साथ करते हैं: श्रेष्ठता/हीनता एवं समानता/अंतर। बुद्धिमत्ता, आकर्षण, रचनात्मकता, इत्यादि विशेषताएँ जिनका उपयोग तुलना के लिए किया जाता है, श्रेष्ठता एवं हीनता के आयाम के अंतर्गत आती हैं। उदाहरण के तौर पर, आप स्वयं को अपने मित्र से अधिक आकर्षक अथवा अपनी बहन से कम रचनात्मक मान सकते हैं, फिर ये सभी निर्णय आपकी आत्म–अवधारणा का हिस्सा बन जाते हैं। जिन समूहों के साथ हम अपनी तुलना करते हैं उन्हें सन्दर्भ समूह कहा जाता है। दूसरों के साथ स्वयं की तुलना और मूल्यांकन करना हानिकारक नहीं है, लेकिन जिन सन्दर्भ समूहों के साथ हम तुलना करते हैं उन्हें तर्कसंगत, उचित, एवं पर्याप्त होना चाहिए। जैसे कि, यदि आपने चित्रकारी की कक्षाएँ करना आरम्भ किया है और आप प्रसिद्ध चित्रकारों से अपनी पेंटिंग की तुलना करके स्वयं को हीन मानने लगते हैं तो आपकी आत्म–अवधारणा पर नकारात्मक प्रभाव प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में, आपको अपनी तुलना उन लोगों से करनी चाहिए जो चित्रकारी के क्षेत्र में नए सीखने वाले हैं।

दूसरों के साथ की समानताओं एवं विभिन्नताओं के आधार पर भी सामजिक तुलना की जाती है। ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं, जब सन्दर्भ समूह के साथ हमारी समानताएँ अधिक वांछनीय होती हैं, जबकि कुछ परिस्थितियों में दूसरों के साथ अंतर अधिक वांछनीय होती हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम (उम्र, व्यक्तित्व, इत्यादि के आधार पर) सन्दर्भ समूह के साथ मिलना चाहते हैं या फिर हम उनसे भिन्न दिखना चाहते हैं। फिर भी, यह समझना चाहिए कि सामजिक तुलना के सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।

3.2.2 आत्म–सम्मान

आत्म–सम्मान उस निर्णय और मूल्यांकन को संदर्भित करता है जिसे हम अपनी अवधारणा से बनाते हैं। यह हमारे स्वयं का मूल्यांकन है, जैसे क्या आप सत्यवादी हैं या असत; शुभ या अशुभ? या आप कौन हैं? हमारे आत्म–अवधारणा की तरह, आत्म–सम्मान भी स्थिति से परिस्थिति में और हमारे जीवनकाल में भिन्न होता है। आत्म–सम्मान हमारी आत्म–अवधारणा के लिए योगदान करने वाले कारकों में से एक है, जबकि आत्म–धारणा भी हमारे स्वयं की भावना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3.2.3 आत्म–क्षमता

आत्म–सक्षमता का तात्पर्य उन मूल्यांकनों से है जो लोग किसी विशिष्ट संदर्भ में किसी कार्य को करने की अपनी क्षमता के आधार पर करते हैं। हमारे सप्रभाव और क्षमताओं की प्रतिक्रिया जो हमें दूसरों से मिलती है, हमारी आत्म–संप्रत्यय और आत्म–सक्षमता को प्रभावित करती है। इसलिए, यदि स्वयं की धारणा सकारात्मक है, तो अधिक आत्मविश्वास और आत्म–क्षमता स्तर है। इसलिए, आत्म–धारणा हमारे व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करती है। जबकि इस प्रक्रिया में से कुछ हमारे

नियंत्रण में है, लेकिन इसका अधिकांश भाग हमारे जीवन में लोगों द्वारा नियंत्रित है। सकारात्मक प्रतिक्रिया हमारी आत्म–क्षमता को बढ़ाती है जबकि स्वयं की नकारात्मक प्रतिक्रिया हमारे आत्म–सक्षमता को कम करती है। यदि कोई विरोधाभास है कि दूसरे हमारे संबंध में क्या सोचते हैं और हम अपने संबंध में क्या सोचते हैं, तो यह हमारे आत्म–संप्रत्यय के साथ–साथ आत्म–सम्मान पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

3.3 सामाजिक एवं व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण के संज्ञानात्मक एवं प्रेरणादायक आधार

सामाजिक एवं व्यक्ति की धारणा के सामाजिक आधार उन प्रक्रियाओं को शामिल करते हैं जिनके माध्यम से हम जानकारी इकट्ठा करते हैं, उसे संसाधित करते हैं तथा चुनते हैं, एवं बाद में इस जानकारी की व्याख्या करते हैं। किन्तु, इस सूचना प्रसंस्करण में जो अधिक महत्वपूर्ण है, वह है हमारी भावनाओं द्वारा निभाई गई भूमिका तथा इस जानकारी को बदलने के हमारे कारण जो हमारी आवश्यकताओं, लक्ष्यों तथा आकांक्षाओं के अनुरूप हों। इसलिए, दूसरों के विषय में एकत्रित जानकारी की सत्यता एवं सटीकता विरूपित हो जाती है। यह जानकारी उस तरह से पायी जाती है कि वह किसी के आत्मसम्मान की सुरक्षा करती है जिसके कारण हमारी गुणारोपण प्रक्रिया में भी विभिन्न पूर्वाग्रह उत्पन्न होते हैं, तथा छवि प्रबंधन एवं आत्म–प्रस्तुति की रणनीतियाँ भी प्रभावित होती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी बुनियादी संवेगात्मक अवस्थाएँ, प्रयोजन, सटीक जानकारी एकत्रित करने का हमारा लक्ष्य हमारी सामाजिक एवं व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण पर छाया रहता है। अब हम गुणारोपण, छवि निर्माण, वर्गीकरण, इत्यादि के उन विभिन्न पूर्वाग्रहों का अध्ययन करेंगे जो इन संज्ञानात्मक एवं गतिशील कारकों का परिणाम हैं।

3.3.1 छवि निर्माण एवं प्रबंधन

दूसरों की छवि निर्माण के छह सरल एवं सामान्य सिद्धांत हैं:

- लोग दूसरों के बारे में बहुत जल्दी एवं न्यूनतम जानकारी के आधार पर धारणाएँ बना लेते हैं तथा उनके सामान्य शीलगुणों को अनुमानित करते हैं।
- लोग किसी व्यक्ति की सबसे मुख्य विशेषताओं पर ध्यान देते हैं। हम लोगों के उन गुणों को नोटिस करते हैं जो एक व्यक्ति को सामान्य की बजाय विशिष्ट अथवा असामान्य बनाते हैं।
- लोगों के विषय में जानकारी प्राप्ति के प्रसंस्करण में उनके व्यवहार की अलग से व्याख्या करने की बजाय उनके व्यवहार के कुछ सुसंगत अर्थ शामिल किये जाते हैं, तथा इस अर्थ को समझने के लिए एक व्यक्ति के व्यवहार के सन्दर्भ का उपयोग किया जाता है।
- हम वर्गीकरण अथवा उत्तेजनाओं के समूहीकरण द्वारा अपनी धारणाओं को व्यवस्थित करते हैं, यानी कि हम प्रत्येक व्यक्ति को एक अलग व्यक्ति के रूप में देखने की बजाय उन्हें एक समूह के सदस्यों के रूप में देखते हैं। उदाहरण के लिए, सफ़ेद कोट पहने लोग चिकित्सक होते हैं।

- लोगों के व्यवहार को समझने के लिए हम संज्ञानात्मक सरंचना का उपयोग करते हैं। यदि हम महिला चिकित्सक से मिलते हैं, तो हम उसके गुणों का पता लगाने तथा उसके व्यवहार का अर्थ समझने के लिए चिकित्सकों के विषय में हमारी जानकारी का अधिक उपयोग करते हैं।

- समझने वाले की अपनी आवश्यकताएँ एवं व्यक्तिगत लक्ष्य दूसरों के विषय में उसके प्रत्यक्षण को प्रभावित करती हैं।

दूसरों के बारे में हमारी छवि कभी–कभी ग़लत क्यों होती हैं? कभी–कभी हमारी छवि मानसिक शॉर्टकट के कारण ग़लत होती हैं जिनका उपयोग हम सामाजिक निर्णय लेते समय करते हैं। लोग दूसरों के कार्यों का आरोप उनके व्यक्तित्व पर लगाते हैं न कि उनकी परिस्थितियों पर।

मनोबंध (स्कीमा) का उपयोग भी एक कारण है कि हमारी धारणा ग़लत हो सकती है। लोग दूसरों के विषय में अपने ज्ञान की कमी को पूरा करने के लिए अन्तर्निहित सिद्धांतों का प्रयोग करते हैं, तथा मानसिक निरूपण अथवा सिद्धांतों का उपयोग इस बात के निर्धारण के लिए करते हैं कि लोगों ने जो किया वह क्यों किया।

ऐसा क्यों लगता है कि हमारी छवि सटीक है जब हम जानते हैं कि 'हमारी छवियाँ ग़लत हो सकती हैं'? इसके पीछे तीन कारण हैं:

पहला – अक्सर हम लोगों को एक बहुत कम स्थितियों में देखते हैं और इसलिए हमें कभी यह देखने का अवसर ही नहीं मिलता कि हमारी छवियाँ ग़लत हैं।

दूसरा – हम इस बात को महसूस नहीं करते कि हमारी छवियाँ तब ग़लत होती हैं जब हम उन्हें सच करते हैं। ऐसा अक्सर आत्मपूरित भविष्यवाणियों के मामले में होता है, यदि उनकी शुरुआती छवि ग़लत भी होती है तो भी हम अक्सर उन्हें सच कर देते हैं।

तीसरा – हमें इस बात का आभास ही नहीं होता की हम ग़लत हैं यदि बहुत सारे लोग किसी व्यक्ति के एक प्रकार के होने पर सहमत होते हैं – भले ही वे सभी लोग ग़लत हों।

3.3.2 छवि प्रबंधन (छवि प्रबंधन – अच्छा दिखने की कला)

दूसरों पर अनुकूल प्रभाव डालने की इच्छा अत्यंत प्रबल होती है, इसलिए हममें से अधिकतर लोग दूसरों के सामने तब अच्छा दिखने का भरपूर प्रयास करते हैं जब वे उनसे पहली बार मिलते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक दूसरों पर अच्छी छवि बनाने के इन प्रयासों का विवरण करने के लिए धारणा प्रबंधन (अथवा आत्म–प्रस्तुति) शब्द का प्रयोग करते हैं, और उनके शोध के परिणाम बताते हैं कि यह बहुत सार्थक हैं।

अपनी छवि को बढ़ाने की विभिन्न तकनीकें दो श्रेणी में आती हैं: आत्म–वर्धन – दूसरों के समक्ष अपनी अपील बढ़ाने का प्रयास तथा अन्य–वर्धन – लक्षित व्यक्ति को विभिन्न तरीक़ों से अच्छा महसूस कराने का प्रयास। आत्म–वर्धन के अंतर्गत अपनी पोशाक के स्टाइल द्वारा अपने भौतिक रूप को बढ़ावा देना, व्यक्तिगत सौन्दर्यीकरण एवं रंगमंच सम्बन्धी विभिन्न सामग्रियों (उदाहरणतः आँखों का चश्मा) का प्रयोग करने जैसी तकनीक आती हैं।

आत्मवृद्धि की अतिरिक्त रणनीतियों में सकारात्मक शब्दों में स्वयं का वर्णन करने के प्रयास सम्मिलित हैं। अन्य वृद्धियों में, लोग दूसरों में सकारात्मक मनोदशा एवं प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करने के लिए कई अलग–अलग रणनीतियों का प्रयोग करते हैं, जैसे कि, चापलूसी। विलियम जेम्स के अवलोकन के अनुसार, व्यक्ति प्रायः लोगों के विभिन्न समूहों में स्वयं के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। उदहारण के लिए, युवा जो कि अपने माता–पिता एवं शिक्षकों के समक्ष निंदनीय तथा आज्ञाकारी होते हैं, अपने मित्रों की संगत में गालियाँ देते हैं एवं अकड़ दिखाते हैं। अधिकतर माता–पिता अपने बच्चों के समक्ष अपना वास्तविक रूप प्रस्तुत नहीं करते जो कि वे अपने सहयोगियों अथवा क़रीबी दोस्तों के सामने करते हैं।

आमतौर पर हम ऐसे बात करते हैं जैसे कि केवल एक आत्म है जो कि स्थिर एवं अच्छी तरह से पारिभाषित है। किन्तु, सामाजिक मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि आत्म को बहुल आत्म के तौर पर देखना अधिक उपयुक्त है क्योंकि लोग विभिन्न स्थितियों में अपने विभिन्न पहलुओं की प्रस्तुति करते हैं। श्लेंकर (1980) ने इसे 'धारणा प्रबंधन' की संज्ञा दी है एवं इसे वास्तविक अथवा कल्पित सामाजिक बातचीत में अनुमानित छवियों को नियंत्रित करने के जागरूक अथवा अचेतन प्रयास के रूप में पारिभाषित किया है। जब ये छवियाँ आत्म के कुछ पहलुओं को व्याख्यायित करती हैं तब हम इस प्रक्रिया को आत्म प्रस्तुति कहते हैं।

स्व–मूल्यांकन प्रश्न I

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. ..... हमारे अनुभवों एवं दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से विकसित हुआ है।
2. लोग दूसरों के विषय में ..... बहुत जल्दी एवं न्यूनतम जानकारी के आधार पर बनाते हैं।
3. उनकी छवि को बढ़ाने की विभिन्न तकनीकें दो श्रेणियों ..... और ..... में आती हैं।
4. समझ बनाने वाले की अपनी आवश्यकताएँ एवं ..... दूसरों की उसकी समझ को प्रभावित करता है।

3.3.3 आत्म–प्रस्तुति के सिद्धांत

कूली (1902/1922) एवं मीड (1934) ने निम्नलिखित सिद्धांत को प्रस्तावित किया है:

- **प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद सिद्धांत:** उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि सामाजिक बातचीत में भाग लेने वाले दूसरों की भूमिका लेने की कोशिश करते हैं और स्वयं को वैसा ही देखते हैं जैसा दूसरे उन्हें देखते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें यह जानने में मदद करती है कि वे दूसरों को कैसे दिखाई देते हैं और उनके सामाजिक व्यवहार को भी निर्देशित करते हैं ताकि इसका वांछित प्रभाव हो। दूसरों की भूमिका लेने से, एक व्यक्ति दूसरों के साथ संवाद करने के लिए सही कपड़े और भाषा का सही पैटर्न चुन सकता है। उदाहरण के लिए, राजनेता और नेता जैसे जवाहरलाल नेहरु और इंदिरा गांधी जैसे नेता उन जगहों के पारंपरिक कपड़े पहनते थे जहाँ वे जाते थे और स्थानीय भाषा के कुछ शब्द भी बोलते थे।

- **आत्म–प्रस्तुति का सिद्धांतः** अरविंग गौफ़मैन ने रंगमंच की दुनिया के लिए इस व्यवहार की समानताएँ तैयार की हैं और 'रोज़मर्रा की जिंदगी में आत्म प्रस्तुति' का सिद्धांत तैयार किया है। गौफ़मैन (1959–1967) ने सामाजिक सहभागिता को एक सैद्धांतिक प्रदर्शन के रूप में वर्णित किया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति "लाइव" कार्य करता है – ध्यान से चुने हुए मौखिक और अमौखिक कृत्यों का एक सेट जो किसी के आत्म को व्यक्त करता है। आत्म–प्रस्तुति में, सामाजिक सहभागिता के मूलभूत नियमों में से एक पारस्परिक प्रतिबद्धता है यानी बातचीत के सभी सदस्य कुछ छवियों की बचत करने वाले उपकरणों का उपयोग करते हैं, ताकि एक छवि को बनाए रखा जा सके। चेहरे को बनाए रखना सामाजिक सहभागिता का लक्ष्य नहीं है, बल्कि सामाजिक सहभागिता को जारी रखना आवश्यक है। वे घटनाएँ जो प्रतिभागियों के छवि को संकट में डालती है, वे रिश्तों के अस्तित्व को भी संकट में डालती हैं। इसलिए हम किसी भी तरह से शर्मिंदगी को रोकने की कोशिश करते हैं जो रिश्तों को संकट में डाल सकती हैं और सामाजिक अंधापन के लिए माफी माँगने में दूसरों की मदद करते हैं। गौफ़मैन के अनुसार, सामाजिक बातचीत के प्रतिभागियों को अपनी आत्म–प्रस्तुति को विनियमित करने में सक्षम होने की आवश्यकता होती है ताकि इसे दूसरों के साथ उचित रूप से स्वीकार और मूल्यांकन किया जा सके।

- **तत्कालीन पहचान सिद्धांतः** सी. एन. ऐलेग्ज़ैंडर द्वारा एक सिद्धांत प्रस्तावित है जिसे 'तत्कालीन पहचान' सिद्धांत कहा जाता है। प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था के लिए सामाजिक व्यवहार का एक पैटर्न है और अलेक्जेंडर ने दावा किया कि लोग अपने सामाजिक पुरस्कारों में खुद के लिए सबसे अनुकूल तत्कालीन पहचान बनाने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए एक, कॉलेज प्रोफ़ेसेर जब एक संगोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करते हैं तो वे उच्च अकादमिक पहचान का लक्ष्य रखते हैं, व्याख्यान के दौरान कुछ हद तक निश्चिंत पहचान तथा एक सामाजिक सभा एवं दोस्तों के साथ अनौपचारिक पहचान का लक्ष्य रखते हैं। यह बस एक भूमिका है, जो एक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में प्रदर्शन कर रहा है।

हालांकि तत्कालीन पहचान विशिष्ट स्थितिगत संदर्भ से भूमिका से ज़्यादा संबंधित है। जहाँ भूमिका उन व्यवहारों पर केंद्रित होती है जो अपेक्षित हैं, तत्कालीन पहचान उन छवियों पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है जो किसी विशेष सामाजिक संपर्क में परियोजना के लिए चुने जाते हैं। आत्म–प्रस्तुति के तीन सिद्धांतों में से प्रत्येक इस बात से सहमत है कि अन्य लोग हमारी छवियाँ बना रहे हैं और इन छवियों का उपयोग हमारे साथ बातचीत करने के प्रति कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सिद्धांत उन विभिन्न प्रकार की युक्तियों की ओर भी इशारा करता है जिनका उपयोग लोग उस छवि को प्रबंधित और नियंत्रित करने के लिए करते हैं जो वे दूसरे को प्रस्तुत करते हैं।

3.3.4 आत्म–प्रस्तुति की रणनीतियाँ

ऐसी कई विभिन्न रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग लोग स्वयं को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने में करते हैं। जोन्स एवं पिटमैन (1982) ने आत्म प्रस्तुति की पाँच प्रमुख सिद्धांतों की पहचान की है जो कि उस विशिष्ट गुण के अनुसार भिन्न होते हैं जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। वे हैं:

3.3.4.1 चाटुकारिता

यह प्रस्तुति की तकनीकों में सबसे आम है, तथा इसे किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों की आकर्षकता द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए अवैध रूप से डिज़ाइन किये गए रणनीतिक व्यवहार के एक वर्ग के रूप में पारिभाषित किया गया है। दूसरे शब्दों में, एक चाटुकार का मुख्य लक्ष्य आसानी से पसंद आनेवाला लगना होता है। ऐसा करने के कई तरीक़े हैं, और इनमें से सबसे आम रणनीति है किसी दूसरे व्यक्ति की प्रशंसा करना।

हालांकि, एक सफ़ल चाटुकार यह जानता है की लोगों की प्रशंसा किस समय करनी है, एवं उसमें कुछ हद तक विश्वसनीयता तथा सत्यता भी होती है। वह अपने विवेक का उचित उपयोग करता है। एक अन्य रणनीति दूसरे व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार की पुष्टि करना है। हम ऐसे लोगों को पसंद करते हैं जिनकी आस्था, दृष्टिकोण, एवं व्यवहार हमारे अपने जैसे होते हैं। किन्तु, यहाँ एक खतरा है, और वह यह है कि यदि अन्य व्यक्ति के (लक्ष्य) चाटुकारिता का संदेह हो जाता है तब यह कारक काम नहीं करता हैं।

3.3.4.2 धमकी

अन्य लोगों में भय उत्पत्ति के लिए है। यह चाटुकारिता के विपरीत है। ख़तरनाक व्यक्ति की छवि बनाकर डराने–धमकाने में, धमकाने वाला शक्ति के प्रयोग द्वारा नियंत्रण स्थापित एवं बातचीत करना चाहता है। धमकी का प्रयोग बहुधा ऐसे रिश्तों में किया जाता है जो ग़ैर–स्वैच्छिक होते हैं एवं जिनमें से पलायन आसानी से संभव नहीं होता। उदाहरण के लिए, एक लुटेरा जो कि पैसे या गहने न दिए जाने पर जान से मारने की धमकी देता है। कभी–कभी माता–पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा करते हैं, एवं शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ भी।

3.3.4.3 आत्म–प्रचार

यह रणनीति ज्यादातर उस समय उपयोग की जाती है जब एक व्यक्ति किसी गतिविधि में स्वयं को सक्षम दिखाना चाहता है। ऐसा वह अपने लक्ष्य के सामने अपने छोटे दोषों एवं कमजोरियों को स्वीकार करके तथा तद्पश्चात उसके सामने अपने उन सकारात्मक गुणों पर ज़ोर देकर करता है जिसकी जानकारी उस लक्ष्य को नहीं है। हालांकि, आत्म–प्रचार के उपयोग में एक ख़तरा है और वह यह है कि योग्यता के आत्म–प्रचारित दावों एवं सच्चाई के बीच बेमेल है। उदहारण के लिए, यदि एक व्यक्ति अपने लक्ष्य के सामने कुछ चीजों में बहुत अच्छा होने का दावा करता है और यदि उस कौशल के परीक्षण की परिस्थिति में कोई योग्यता नहीं दिखा पाता तब वह अपनी विश्वसनीयता खो देता है।

3.3.4.4 दृष्टांत

यहाँ लक्ष्य उन छवियों को प्रभावित करना है, जिनसे साबित हो कि अन्य लोग कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता नहीं हैं। व्यक्ति यहाँ यह साबित करना चाहता है कि उसके अन्दर दूसरों की तुलना में अधिक ईमानदारी एवं नैतिक योग्यता है तथा इसके द्वारा वह लक्ष्य व्यक्ति में दोषी होने की भावना को जगाना चाहता है। वह स्वयं की एक पीड़ित की छवि बनाना चाहता है।

3.3.4.5 याचना

यहाँ व्यक्ति स्वयं की दुर्बलताओं का प्रचार करता/करती है एवं दूसरों पर निर्भर करता/करती है। इस तरह वह सहानुभूति पाना चाहता है। आमतौर पर यह अंतिम उपाय होता है, यानी कि जो व्यक्ति किसी अन्य रणनीति का प्रयोग करने में असफल होता है या वह सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह व्यक्ति अपनी असहायता की छवि प्रस्तुत करता है और इस बात की उम्मीद रखता है कि वह अपने लक्ष्य से कर्तव्य भावना की प्राप्ति कर सकेगा। वह विभिन्न अवसरों पर आत्म–प्रस्तुति की पाँचों रणनीतियों का उपयोग कर सकता है। अतः लोग किसी एक या अन्य रणनीति में विशेषज्ञता प्राप्त कर एक से अधिक अवसर पर उसी रणनीति का उपयोग कर सकते हैं। चुनाव अथवा मेल चाहे कुछ भी हो, व्यक्ति का उद्देश्य दूसरे के मन में मनचाही छवि बनाना होता है, जिससे कि उसके मनचाहे प्रभाव की प्राप्ति की संभावनाएँ बढ़ जाएँ।

3.3.5 आत्म–प्रस्तुति में व्यक्तिगत अंतर

आत्म–प्रस्तुति पर हुए शोध के माध्यम से भी यह सत्य पाया गया है कि लोग उन छवियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं जो दूसरे उनके बारे में सामाजिक बातचीत के समय बनाते हैं। यद्यपि हर कोई समय–समय पर ऐसे कार्यों में संलग्न होता है, लेकिन उनकी आत्म–प्रस्तुति को नियंत्रित करने की सीमा में महत्वपूर्ण अंतर होता है। कुछ लोग कभी कभी इस तरह के कार्य में संलग्न होते हैं, यद्यपि कुछ लोग अक्सर ही इस युक्ति का प्रयोग करते हैं और अत्यधिक कौशल के साथ करते हैं। लोग आत्म–प्रस्तुति के मौखिक एवं अमौखिक संकेतों पर नियंत्रण रखने में भिन्न होते हैं तथा इसे आत्म–निगरानी का अभिव्यंजक व्यवहार (*स्निंडर*, 1979) कहा जाता है।

बहुत अधिक आत्म–निगरानी करने वाले व्यक्ति विशेष रूप से सामाजिक परिस्थितियों में अभिव्यक्तियों एवं दूसरों की आत्म–प्रस्तुतियों के प्रति संवेदनशील होते हैं, तथा वे इन संकेतों का उपयोग स्वयं अपनी धारणा–प्रबंधन में की जाने वाली आत्म–प्रस्तुति की निगरानी के लिए करते हैं।

वास्तव में वे स्वयं को किसी भी सामाजिक परिस्थिति में ढाल सकते हैं, उदाहरण के लिए, वे एक धीर, अलग–थलग एवं अंतर्मुखी व्यक्ति के ढंग को अपना सकते हैं एवं तुरंत ही अपने चेहरे पर काम कर सकते हैं और स्वयं को उतना ही विश्वासप्रद, मित्रतापूर्ण, मिलनसार एवं बहिर्मुखी व्यक्ति की तरह चित्रित कर सकते हैं। आत्म–प्रस्तुति की परिस्थितियों में, वैसे व्यक्ति जो कि बहुत अधिक आत्मनिर्भर होते हैं, व्यवहार के उपयुक्त नमूनों (patterns) की सामाजिक तुलनाओं एवं जानकारी की खोज करने की अत्यधिक संभावना रखता है। वे दूसरों को पढ़ने एवं समझने के प्रयास में पर्याप्त श्रम करते हैं तथा तदनुसार व्यहार करते हैं और अपनी आत्म–प्रस्तुति को स्वीकृति प्राप्ति अथवा बातचीत की शक्ति प्राप्ति के लिए मार्गदर्शित करते हैं।

हालांकि, छवि प्रबंधन पर आत्म–प्रस्तुति भ्रामक उद्देश्यों के लिए नहीं है, बल्कि यह लोगों एवं नीतियों के जटिल मिश्रण वाले वातावरण में एक अनुकूलनीय कौशल है।

- **आत्म–प्रस्तुति एवं मानव प्रकृतिः** आत्म–प्रस्तुति सामाजिक जीवन का एक मूल तथ्य है। मनुष्य अपने 'आत्म' की उन छवियों को प्रभावित करता है जो दूसरों को दिखाने के लिए होती है, लेकिन इन सब में 'वास्तविक' आत्म कहाँ है? जैसा

कि पहले से ही ज्ञात है, हम सबके पास कई आत्म हैं जिन्हें हम अलग–अलग लोगों के समक्ष अलग–अलग तरीक़े से से प्रस्तुत करते हैं, किन्तु ये सभी केवल एक 'सच्चे आत्म' के कई रूप हैं जिनमें से कुछ विशेषताओं का चयन आत्म प्रस्तुति कारक कर रहे हैं एवं कुछ को छोड़ रहे हैं। अतः, आत्म–प्रस्तुति रोज़मर्रा की सामाजिक बातचीत का एक अभिन्न अंग है।

स्व मूल्यांकन प्रश्न II

1. आत्म–प्रस्तुति की किन्हीं दो रणनीतियों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सारांश

इस इकाई में हमने सामाजिक एवं व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण के संज्ञानात्मक तथा अभिप्रेरणा आधार की चर्चा की है। हमने यह दिखाने का प्रयास किया है की तंत्रिका व्यवस्था किस प्रकार से प्रत्यक्षण इत्यादि को प्रभावित करती है। हमने छवि निर्माण एवं उसमें सम्मिलित प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया। छवि प्रबंधन की प्रक्रियाओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। इसके साथ ही आत्म–प्रस्तुति का विस्तारपूर्ण विश्लेषण किया। आत्म प्रस्तुति के इन सिद्धांतों एवं इनमें प्रयोग की जाने वाली अलग–अलग रणनीतियों पर सही दृष्टिकोण से चर्चा की है।

3.5 इकाई अंत प्रश्न

1. आत्म संप्रत्यय के विकास का अर्थ और प्रक्रिया को स्पष्ट करें।
2. छवि निर्माण एवं प्रबंधन विस्तार से स्पष्ट करें।
3. आत्म–प्रस्तुति के सिद्धांतों पर चर्चा करें।
4. आत्म–प्रस्तुतीकरण की रणनीतियों का वर्णन करें।

3.6 शब्दावली

आत्म–संप्रत्यय : यह हमारे विषय में हमारी समझ को दर्शाता है।

आत्म–सम्मान : आत्म की अवधारणा के विषय में लिए जाने वाले अपने निर्णयों एवं मूल्यांकनों को दर्शाता है।

आत्म–प्रभावकारिता : वे मूल्यांकन जो लोग विशिष्ट सन्दर्भ में कार्य करने की अपनी क्षमता के विषय में करते हैं।

आत्म–प्रस्तुतीकरण की रणनीतियाँ : विभिन्न रणनीतियाँ जिनका प्रयोग लोग स्वयं को दूसरों के सामने प्रस्तुत करने में करते हैं।

चाटुकारिता : किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों के आकर्षण द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए अवैध रूप से तैयार किये गए रणनीतिक व्यवहार का एक वर्ग।

धमकी : ख़तरनाक व्यक्ति की छवि बनाकर डराने–धमकाने में, धमकानेवाला शक्ति के प्रयोग द्वारा नियंत्रण स्थापित एवं बातचीत करना चाहता है।

आत्म–वर्धन : यह रणनीति उस समय प्रयोग में लायी जाती है जब एक व्यक्ति किसी गतिविधि में स्वयं को सक्षम दिखाना चाहता है।

दृष्टांत : यहाँ व्यक्ति यह साबित करना चाहता है कि दूसरों की तुलना में उसके अन्दर अधिक निष्ठा एवं नैतिक योग्यता है, एवं लक्षित व्यक्ति में अपराधबोध जगाना चाहता है।

याचना : यहाँ व्यक्ति स्वयं की कमज़ोरी को प्रचारित करता/करती है एवं दूसरे व्यक्ति पर निर्भर करता है।

3.7 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व मूल्यांकन प्रश्न 1

1. आत्म अवधारणा
2. प्रभाव
3. आत्म–वृद्धि तथा अन्य वृद्धि
4. व्यक्तिगत लक्ष्य

स्व मूल्यांकन प्रश्न 2

क) चाटुकारिता: यह प्रस्तुति की तकनीकों में सबसे आम है, तथा इसे किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों की आकर्षकता द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए अवैध रूप से डिज़ाइन किये गए रणनीतिक व्यवहार के एक वर्ग के रूप में पारिभाषित किया गया है। दूसरे शब्दों में, एक चाटुकार का मुख्य लक्ष्य आसानी से पसंद आनेवाला लगना होता है। ऐसा करने के कई तरीक़े हैं, और इनमें से सबसे आम रणनीति है किसी दूसरे व्यक्ति की प्रशंसा करना।

हालांकि, एक सफ़ल चाटुकार यह जानता है की लोगों की प्रशंसा किस समय करनी है, एवं उसमें कुछ हद तक विश्वसनीयता तथा सत्यता भी होती है। वह अपने विवेक का उचित उपयोग करता है। एक अन्य रणनीति दूसरे व्यक्ति के विचार एवं व्यवहार की पुष्टि करना है। हम ऐसे लोगों को पसंद करते हैं जिनकी आस्था, दृष्टिकोण, एवं व्यवहार हमारे अपने जैसे होते हैं। किन्तु, यहाँ एक भय है, और वह यह है कि यदि अन्य व्यक्ति (लक्ष्य) चाटुकारिता का संदेह हो जाता है तब यह कारक काम नहीं करता।

ख) धमकी: दूसरे लोगों में भय जगाने के लिए होती है। यह चाटुकारिता के विपरीत होती है। ख़तरनाक व्यक्ति की छवि बनाकर डराने–धमकाने में, धमकानेवाला शक्ति के प्रयोग द्वारा नियंत्रण स्थापित एवं बातचीत करना चाहता है। धमकी का प्रयोग बहुधा ऐसे रिश्तों में किया जाता है जो ग़ैर–स्वैच्छिक होते हैं एवं जिनमें से पलायन आसानी से संभव नहीं होता। उदाहरण के लिए, एक लुटेरा जो की पैसे

या गहने न दिए जाने पर जान से मारने की धमकी देता है। कभी–कभी माता–पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा करते हैं, एवं शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ भी।

3.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Adorno and Colleagues quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007), *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Aronson E, Wilson T.D,and Akert R.M (1998) *Social Psychology (third edition)*, Longman Inc.

References

Aarts and Dijksterhuis, 2003 quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). "*Social Psychology (12th edition.)*, Pearson Education, India.

Ajzen 1996 quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Albert Bandura, *Self-Efficacy: The Exercise of Control* (New York, NY: W. H. Freeman, 1997).

Anderson 1968 quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Barbara M. Byrne, *Measuring Self-Concept across the Life Span: Issues and Instrumentation* (Washington, DC: American Psychological Association, 1996), 5.

Baron.R, Byrne D (2003). *Social Psychology*, Prentice Hall of India Pvt Ltd., New Delhi.

Bond and Atoum 2000, quoted in Baron, R.A Donn Byrne (2006). *Social Psychology (10th edition.)*, Prentice Hall of India, New Delhi.

Carner and Glass 1978, quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Caroll 1996, quoted in Baron, R.A Donn Byrne (2006). *Social Psychology (10th edition.)* Prentice Hall of India, New Delhi.

Charles Cooley, *Human Nature and the Social Order*, (New York, NY: Scribner, 1902).

Chaube S.P, *Social Psychology* (1986), Lakshmi Navayan Agarwal, Educational Publishers, Agra. Pg-21-24.

Coffman 1967 quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007), *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Cooley 1922 quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Cross and John 2003, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition)*, Pearson Education, India.

Depaulo 1992, quoted in Baron, R.A Donn Byrne (2006) *Social Psychology (10th edition)*, Prentice Hall of India, New Delhi. Ekman and Friesen 1975 quoted in Baron, R.A Donn Byrne (2006) *Social Psychology (10th edition)* Prentice Hall of India, New Delhi.

Foriester and Liberman 2001, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition)*, Pearson Education, India.

Gray 2009, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition)*, Pearson Education, India.

Gross and Miller quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Harding, Kunter, Proshanky&Chein 1954, quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Heider 1958 quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

John Bargh&Assou 1996, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition)*, Pearson Education, India.

Joel Brockner, Self-Esteem at Work (Lexington, MA: Lexington Books, 1988), 11.

Joel Brockner, Self-Esteem at Work (Lexington, MA: Lexington Books, 1988), 2.

Jones and Davis 1965, quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Jones and Pillman 1982, quoted in Crisp, R.J, Rhianomon N Turner (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi.

Milgram 1963, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition)*, Pearson Education, India.

Owen Hargie, *Skilled Interpersonal Interaction: Research, Theory, and Practice*, (London: Routledge, 2011), 261.

Owen *Hargie, Skilled Interpersonal Interaction: Research, Theory, and Practice*, (London: Routledge, 2011), 99.

Turner R.N and Richard J.Crisp (2007). *Essential Social Psychology*, Sage Publications, New Delhi Pg-39-71.

Zalenski and Larsen 2002, quoted in Taylor, E.S, Letitia Anne Peplau, David O.Sears (2006). *Social Psychology (12th edition.)*, Pearson Education, India.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 सामाजिक प्रसंग में आत्म*

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 संस्कृतिः अर्थ एवं परिभाषा

4.3 संस्कृतीकरण (Enculturation) एवं परसंस्कृतिग्रहण (Acculturation)

4.3.1 संस्कृतीकरण एवं परसंस्कृतिग्रहण में अंतर

4.3.2 एनकल्चरेशन के अभिकर्ता

4.3.2.1 माता.पिता और बहन.भाई

4.3.2.2 विस्तृत परिवार

4.3.2.3 साथी समूह के मध्य संबंध

4.3.2.4 शिक्षा

4.3.2.5 धर्म

4.4 विभिन्न संस्कृतियों में आत्म (स्व)

4.4.1 संस्कृतियों में विभिन्न सेल्फ कन्स्ट्रुअल का परिणाम

4.4.2 बहुलसांस्कृतिक पहचान का मामला

4.4.2.1 अंतरा.वैयक्तिक स्तर पर

4.4.2.2 अंतर्वैयक्तिक स्तर पर

4.4.2.3 सामूहिक स्तर पर

4.5 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजिक व्यवहार

4.5.1 समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतःसांस्कृतिक विभेद

4.5.2 अन्तःसमूह पहचान बनाम अन्तःसमूह पक्षपात

4.5.3 गुणारोपण

4.5.4 आक्रामकता

4.5.5 व्यक्ति प्रत्यक्षण, आकर्षण, एवं संबंध

4.6 सारांश

4.7 इकाई के अंत मे पूछे जाने वाले प्रश्न

4.8 शब्दावली

4.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

4.10 सुझाए गये पाठन एवं संदर्भ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात, आप सक्षम हो सकेंगेः

- संस्कृति को परिभाषित और वर्णन करना;
- अपमान और आरोपण के बीच अंतर स्पष्ट करना;

* डॉ. अरी सूदन तिवारी, वैज्ञानिक 'ई' रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ रोड़, तिमारपुर, दिल्ली

- ऐसे एजेंटों को समझना जो अपने समाज के व्यक्ति के अपमान को प्रभावित करते हैं;
- व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बीच अंतर करना;
- अन्तः समूह पहचान, बहुसांस्कृतिक पहचान और अन्तः समूह पूर्वाग्रह को समझना;
- समझाएं कि समूह सदस्यता की गतिशीलता संस्कृतियों में कैसे भिन्न होती है; तथा
- आक्रामकता, गुणारोपण, आकर्षण, व्यक्ति की धारणा और रिश्तों पर सांस्कृतिक प्रभाव पर चर्चा करना।

4.1 परिचय

जब भी हम किसी दूसरे देश की यात्रा करते हैं, तो हम उस देश के लोगों के जीवन और जीवन शैली के बीच कई अंतर पाते हैं। उस देश के लोग ऐसी भाषा बोलते हैं जो हमसे अलग है। वे ऐसे खाद्य पदार्थ खाते हैं जिन्हें हम आमतौर पर नहीं खाते हैं। वे भिन्न तरीकों से खुशी और दुःख व्यक्त करते हैं जो हमारे लिए समान नहीं हैं। बांड और संबंधों का प्रकार और प्रकृति जो वे अपने समाजों और परिवारों में बनाते हैं, वे भी उनके लिए अद्वितीय होते हैं।

हम अक्सर समाजों में इस तरह के मतभेदों को अपनी संस्कृतियों में अंतर को जिम्मेदार मानते हैं। इस इकाई में, आपको संस्कृति की अवधारणा, एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन की प्रक्रिया के साथ–साथ व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बारे में पता चलेगा। इकाई के अंत तक, आपको व्यक्तियों के प्रत्यक्षण और कार्यों पर सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में भी पता चल जाएगा।

4.2 संस्कृतिः अर्थ और परिभाषा

संस्कृति शब्द का उपयोग आमतौर पर सामान्य भाषा में जाति, राष्ट्रीयता, जातीयता आदि के साथ किया जाता है। संस्कृति शब्द का उपयोग संगीत, नृत्य, कला, भोजन, वस्त्र, अनुष्ठान, परंपराओं और एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र की बड़ी विरासत को इंगित करने के लिए भी किया जाता है। संस्कृति भी कई विषयों, जैसे समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान, शिक्षा, विपणन और, निश्चित रूप से, मनोविज्ञान में अध्ययन का एक बहुत ही आवश्यक क्षेत्र रहा है। ये सभी विषय संस्कृति को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। इन सभी दृष्टिकोणों की समीक्षा करने के बाद, बेरी, पोर्टिंगा, सेगल, और डेसेन (1992) ने छह व्यापक दृष्टिकोणों का सुझाव दिया जिसमें संस्कृति को समझा जाता है।

संस्कृति का वर्णनात्मक परिप्रेक्ष्य किसी संस्कृति से जुड़ी गतिविधियों या व्यवहारों के स्पेक्ट्रम पर जोर देता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण लोगों की एक समूह से जुड़ी विरासत और परंपराओं को समझने में मदद करता है। सामान्य दृष्टिकोण, संस्कृति विशिष्ट नियमों और मानदंडों का वर्णन करता है। संस्कृति की मनोवैज्ञानिक व्याख्या सीखने, समस्या को हल करने और संस्कृति से जुड़े अन्य व्यवहारिक दृष्टिकोणों पर जोर देती है। संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य, किसी संस्कृति के सामाजिक या संगठनात्मक तत्वों पर प्रकाश डालता है। और अंत में, अनुवांशिक दृष्टिकोण संस्कृति की उत्पत्ति पर चर्चा करता है।

इस प्रकार, संस्कृति एक जटिल अवधारणा है जो हमें हमारे जीवन में विभिन्न गतिविधियों, व्यवहारों, घटनाओं, संरचनाओं आदि को समझने में मदद करती है। इसकी जटिलता को दर्शाते हुए, विभिन्न शोधकर्ताओं ने संस्कृति को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। इनमें से कुछ प्रतिनिधि परिभाषाएँ नीचे दी गई हैं:

रोहनर (1984) : संस्कृति मानव जनसंख्या द्वारा बनाए गए समतुल्य और पूरक सीखे गए अर्थों की समग्रता है, या एक आबादी के पहचान योग्य क्षेत्रों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रेषित होती है।

ट्रायंडिस (1972) : संस्कृति में कुछ वस्तुनिष्ठ पहलू शामिल हैं, जैसे उपकरण, और कुछ व्यक्तिपरक पहलू, जैसे शब्द, साझा विश्वास, दृष्टिकोण, मानदंड, भूमिका और मूल्य।

जहोदा (1984) : संस्कृति एक वर्णनात्मक शब्द है जो न केवल नियम और अर्थ बल्कि व्यवहार को भी दर्शाता है।

मात्सुमोतो और जुआंग (2008): संस्कृति स्पष्ट और निहित नियमों की एक गतिशील प्रणाली है, जो उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए समूहों द्वारा स्थापित किया गया है, जिसमें एक समूह द्वारा साझा किया गया दृष्टिकोण, मूल्य, विश्वास, मानदंड और व्यवहार शामिल हैं, लेकिन प्रत्येक विशिष्ट इकाई द्वारा अलग तरह से नुकसान पहुंचाया गया है जिसे कई पीढ़ियों में संचारित किया गया है जो की अपेक्षाकृत स्थिर लेकिन समय के साथ बदलने की क्षमता रखता है।

इन परिभाषाओं को देखने के बाद, यह प्रतीत होता है कि मात्सुमोतो और जुआंग (2008) ने अन्य परिभाषाओं की सभी आवश्यक विशेषताओं को शामिल करके संस्कृति को बहुत व्यापक अर्थों में समझाया है। परिभाषा संस्कृति के निम्नलिखित घटकों का वर्णन करती है:

- **गतिशील प्रकृति :** संस्कृति एक गतिशील प्रणाली है जो किसी आबादी में औसत, मुख्यधारा और प्रतिनिधि प्रवृत्तियों का वर्णन करती है। संस्कृति को किसी दिए गए संस्कृति में सभी व्यक्तियों के सभी व्यवहारों के लिए एक निश्चित दिशानिर्देश के रूप में नहीं लिया जा सकता है। एक व्यक्ति के विभिन्न व्यवहारों और विभिन्न व्यक्तियों और संस्कृति के व्यवहारों के बीच हमेशा एक निश्चित मात्रा में विचलन होता है। यह असंगति संस्कृति के भीतर एक गतिशील तनाव की ओर ले जाती है और इसलिए, संस्कृति को स्थैतिक के रूप में नहीं समझा जा सकता है। हालांकि, संस्कृति की मात्रा अलग–अलग संस्कृतियों में भिन्न हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ संस्कृतियों को तनाव की मात्रा में उच्च माना जाता है, जबकि अन्य में तनाव की कम मात्रा हो सकती है।

- **नियमों की प्रणाली :** एक संस्कृति में विभिन्न व्यवहार, नियम, दृष्टिकोण या मूल्य अलगाव में मौजूद नहीं हैं। इसके बजाय, संस्कृति एक ऐसी प्रणाली को संदर्भित करती है जिसमें ऐसे स्पष्ट रूप से असंबंधित लेकिन कार्यात्मक रूप से परस्पर संबंधित मनोवैज्ञानिक घटकों का एक नक्षत्र शामिल होता है।

- **समूह और इकाइयाँ :** अलग–अलग स्तर हैं जिन पर संस्कृति परिलक्षित होती है। जब हम इसे समूहों के भीतर व्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में लेते हैं, तो संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली इकाइयाँ समूह के भीतर विशिष्ट व्यक्ति होती हैं। हालांकि,

एक बड़े समूह के लिए जिसमें कई छोटे समूह शामिल हैं, विभिन्न खंड संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली विशिष्ट इकाइयाँ हैं।

- **समूह का अस्तित्व सुनिश्चित करना :** संस्कृति में मौजूद नियमों की प्रणाली व्यवहार पर एक बाधा के रूप में कार्य करती है। नियमों की अनुपस्थिति से अराजकता की स्थिति पैदा हो सकती है। ये नियम सामाजिक व्यवस्था के लिए एक संरचना की पेशकश और प्रचार करके समूह के भीतर छोटी इकाइयों को एक–दूसरे के साथ सहयोग करने में मदद करते हैं। नियम बड़े सामाजिक संदर्भ और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर समूहों और इकाइयों की जरूरतों और इच्छाओं के बीच संतुलन को बढ़ावा देते हैं।

- **मनोवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी घटक :** उद्देश्य और मूर्त घटकों (संगीत, नृत्य, कला, भोजन, कपड़े, आदि) के अलावा, संस्कृति का गठन संस्कृति में रहने वाले व्यक्तियों के मन और मानस की सामग्री द्वारा भी किया जाता है। संस्कृति के ऐसे व्यक्तिपरक और गैर–भौतिक घटकों में दृष्टिकोण, मूल्य, विश्वास, विचार, मानदंड, व्यवहार आदि शामिल हैं। ये घटक संस्कृति में साझा किए जाते हैं और स्वैच्छिक व्यवहार, सदस्यों की स्वचालित प्रतिक्रियाओं और आदतों, और समग्र रूप से, अनुष्ठानों में व्यक्त किए जाते हैं।

- **व्यक्तिगत अंतर :** किसी विशेष संस्कृति में अलग–अलग व्यक्ति सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण, मान्यताओं, मानदंडों, व्यवहारों आदि को लेने और उनके पालन करने की मात्रा में भिन्न होते हैं। इसलिए, किसी भी संस्कृति में सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण, विश्वास के पालन में अलग.अलग अंतर होते हैं। मानक और व्यवहार या संस्कृति के अनुरूप। हालांकि, कुछ ढीले समाज या संस्कृतियाँ अपने सदस्यों को संस्कृति के साथ अधिक असहमति की अनुमति देती हैं, जबकि कुछ तंग समाज या संस्कृतियाँ हैं जो संस्कृति में बड़े पैमाने पर अंतर करती हैं या पहचान नहीं पाती हैं (*पेल्टो*, 1968)।

- **एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संप्रेषित :** संस्कृति एक फैशन प्रवृत्ति नहीं है जो कुछ लोगों द्वारा कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से पालन और अभ्यास किया जाता है और जो समय के साथ गायब हो जाता है। बल्कि संस्कृति, जिसमें नियमों की प्रणाली के मुख्य पहलू शामिल हैं, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित होती है और इसलिए, यह समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर रहती है।

- **समय के साथ अपरिहार्य परिवर्तन :** हालांकि संस्कृति को समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर माना जाता है, यह अपरिहार्य परिवर्तनों की कुछ मात्रा से भी गुजरता है। उदाहरण के लिए, पिछले 30 वर्षों में भारतीय संस्कृति में तकनीकी प्रगति के कारण आमूल.चूल परिवर्तन हुए हैं। संस्कृति एक जटिल प्रणाली है जिसमें इसके परस्पर संबंधित घटक और इकाइयाँ शामिल होती हैं, और इसके किसी भी घटक और इकाइयों में परिवर्तन एक प्रणाली के रूप में समग्र संस्कृति में परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

4.3 संस्कृतीकरण (Enculturation) एवं परसंस्कृतीकरण (Acculturation) अकल्चरेशन

हम विभिन्न संस्कृतियों के लोगों में उनके मूल्यों, दृष्टिकोण, मान्यताओं, मानदंडों, व्यवहार, संगीत, नृत्य, कला, भोजन और कपड़ों के संदर्भ में कई अंतरों को देखते हैं। इस तरह के मतभेदों का कारण समाजीकरण की प्रक्रिया में है जो वे अपनी अलग संस्कृतियों में गुजरते हैं। संस्कृति की कई एजेंसियाँ हैं, जैसे कि माता–पिता, सहकर्मी, शैक्षणिक संस्थान, धार्मिक संस्थान आदि, जो हमारी अपनी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को सीखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन प्रक्रियाओं से हम किसी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को सीखते हैं, प्राप्त करते हैं और अपनाते हैं एनकल्चरेशन एवं अकल्चरेशन कहते हैं। एनकलचरेशन का अर्थ, उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा हमारी अपनी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को संस्कृति के विभिन्न एजेंसियों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित किया जाता है।

4.3.1 संस्कृतीकरण एवं परसंस्कृतीकरण में अंतर

अकल्चरेशन से एनकल्चरेशन थोड़ा अलग है। अकल्चरेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति ऐसी संस्कृति को अपनाता है जो कई मामलों में उसकी मूल रूप से भिन्न होती है। इस प्रकार, एनकल्चरेशन वहाँ होता है जहाँ हम पैदा हुए होते हैं और संस्कृति के परिचित होने की प्रक्रिया जन्म के ठीक बाद शुरू होती है। हालांकि, अकल्चरेशन के मामले में हमारे स्वयं के अलावा अन्य संस्कृति का प्रभाव तभी शुरू होता है जब हम दूसरी संस्कृति में चले जाते हैं। इसके अलावा, एनकल्चरेशन सहज है और काफी हद तक एक अनैच्छिक, स्वचालित और अपरिहार्य प्रक्रिया है। लेकिन अकल्चरेशन की प्रक्रिया अक्सर मौजूदा सांस्कृतिक शिक्षा और नई सांस्कृतिक प्रथाओं और व्यक्ति के संपर्क में आने के बीच अंतर्द्वंद्व का सामना करती है।

4.3.2 संस्कृतीकरण के अभिकर्ता

जैसा कि माना जाता है, संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित होती है। संस्कृति के विभिन्न घटकों की यह संचरण प्रक्रिया संस्कृति के विभिन्न एजेंटों, जैसे कि माता–पिता और बुनियादी परिवार, साथियों, शैक्षणिक संस्थानों, धार्मिक संस्थानों आदि द्वारा संचालित और सुसाध्य होता है।

4.3.2.1 माता.पिता और भाई–बहन

एक शिशु के व्यक्तित्व और उसके अन्य मनोवैज्ञानिक मेकअप पर सबसे पहले पर्यावरणीय प्रभाव माता–पिता से आता है। लेविन (1977) द्वारा तीन पैतृत्व लक्ष्यों का एक पदानुक्रम प्रस्तुत किया गया था जिसमें शामिल हैं:

i) संतान की शारीरिक उत्तरजीविता,

ii) आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाले व्यवहार को बढ़ावा देना, और

iv) नैतिकता सहित अन्य सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

माता–पिता की आर्थिक प्रतिष्ठा (समान समाज में भी) पैतृत्व लक्ष्य के स्तर का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है जिस पर वे ध्यान दे सकते हैं। संस्कृतियों में पालन–पोषण के व्यवहार में समानता और अंतर की जाँच करने के लिए पिछले कुछ दशकों में कई

तरह के अंतर–सांस्कृतिक अध्ययन किए गए हैं। विकास संबंधी अपेक्षाओं (*सोलिस–केमरा* और *फॉक्स*, 1995), एक अनुशासनात्मक माप के रूप में प्राधिकरण के उपयोग (*पप्स, वाकर, ट्रंबोली*, और *ट्रंबोली*, 1995) और उच्च शक्ति (*मैकवे, ली.ओ नील, ग्रोइसमैन, रॉबर्ट्स.बुटेलमन, डींगरा, पोर्डेर*) पर जोर देने के संदर्भ में समानताएँ पाई गई हैं।

लालन–पालन (Parenting) में अंतःसांस्कृतिक अंतर से संबंधित अध्ययनों से संकेत मिलता है कि ये अंतर माता–पिता के लक्ष्यों के सार की विशिष्टताओं से संबंधित हैं। इन अध्ययनों ने यह भी जाँच की है कि एक हद तक विभिन्न लालन–पालन शैलियों में विभिन्न मनोवैज्ञानिक निर्माणों पर सांस्कृतिक अंतर होता है। इस तरह के एक अध्ययन (*कॉनरॉय, हेस, अजूमा,* और *काशिवगी*, 1980) में छोटे बच्चों से अनुपालन प्राप्त करने के लिए जापानी और अमेरिकी माताओं द्वारा नियोजित रणनीतियों की जाँच की। अध्ययन के निष्कर्षों ने संकेत दिया कि अनुपालन प्राप्त करने के लिए जापानी माताओं को काफी हद तक व्यक्तिगत और पारस्परिक संबंधों पर निर्भर थे, जबकि अमेरिकी माताओं को पुरस्कार और दंड देने की दिशा में अधिक उन्मुख थे। जापानी माताओं को भावनात्मक अपील में शामिल होने की अधिक इच्छा थी और उन्होंने अमेरिकी माताओं की तुलना में अधिक लचीलापन प्रदर्शित किया, जिन्होंने माताओं के रूप में अपने अधिकार के आधार पर रणनीति बनाई। लालन–पालन पर इस तरह के अंतर स्पष्ट रूप से संस्कृतीकरण और समाजीकरण के पैटर्न में व्यापक सांस्कृतिक अंतर को दर्शाते हैं।

सांस्कृतिक अंतर माता–पिता के रूप में उनकी भूमिकाओं के बारे में विश्वासों द्वारा उनकी भागीदारी के प्रकार को प्रभावित कर सकते हैं। लेविन एवं सहयोगियों (1996) ने अमेरिकी माताओं (बोस्टन उपनगर) द्वारा सहभागिता और सक्रिय भागीदारी पर जोर दिया गया, और केन्याई माताओं (गुसी क्षेत्र की) द्वारा बाल–सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह अंतर लालन–पालन और एनकल्चरेशन के कथित लक्ष्यों में अंतर के परिणामस्वरूप माना जाता है।

बॉम्ब्रिंड (1971) और मैककोबी और मार्टिन (1983) द्वारा शुरू किया गया लोकप्रिय मॉडल चार लालन–पालन शैलियों का वर्णन करता है :

i) सत्तवादी शैली (गर्मजोशी में कम, नियंत्रण में उच्च)

ii) अनुज्ञात्मक शैली (उच्च गर्मजोशी, नियंत्रण में कम)

iii) प्राधिकृत शैली (गर्मजोशी और नियंत्रण में उच्च) और

iv) लापरवाह शैली (गर्मजोशी और नियंत्रण में उच्च)

इनमें से, आधिकारिक लालन–पालन को अक्सर बच्चे के इष्टतम विकास के लिए सबसे अच्छी शैली के रूप में मान्यता दी गई है (*बॉम्ब्रिंड*, 1967)। हालांकि, जिस मॉडल को यूरोपीय अमेरिकी प्रतिभागियों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, वह अन्य संस्कृतियों में दृढ़ता से नहीं टिक सकता है। शियाओ शुन (या प्रशिक्षण) की चीनी अवधारणा लालन–पालन की एक विशिष्ट शैली है जो विशेष रूप से संस्कृति में माता–पिता के बच्चे के रिश्ते और बच्चों के परिणामों पर लागू होती है (*चाओ*, 1994)। स्टीवर्ट और सहकर्मियों (1999) ने पाकिस्तानी लालन–पालन को कम गर्म एशियाई देशों की लालन–पालन शैलियों पर पारंपरिक अध्ययन से विभेदित किया है, यह सुझाव देते हुए कि पूर्व गोलार्ध के देश आमतौर पर अधिक गर्म है। यह अलग–अलग

अर्थों का भी परिणाम हो सकता है कि सभी संस्कृतियों में लालन–पालन शैली के घटक होते हैं। इसी तर्ज पर, एक संस्कृति में नियंत्रण का नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है जबकि दूसरी संस्कृति के बच्चे इसे सकारात्मक रूप से देख सकते हैं। हालांकि, परासंस्कृतीकरण इन अर्थों को परिवर्तित कर सकता है। उदाहरण के लिए, जब कोरियाई बच्चे कनाडा और अमेरिका जैसे देशों में प्रवास करते हैं, तो माता–पिता के नियंत्रण को नकारात्मक रूप से महसूस करते हैं (किम, 1992), हालांकि कोरिया में रहने वाले लोग इसी चीज को सकारात्मक देखते हैं (*रोहनर* और *पेटेनफिल*, 1985)।

बच्चों की मातृ अपेक्षाओं (*जोशी* और *मैकलेन*, 1997) पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि भारतीय माताओं को आमतौर पर जापानी और ब्रिटिश माताओं की तुलना में अपने बच्चों के विकास संबंधी डोमेन (पर्यावरण की स्वतंत्रता के लिए उम्मीद) की उम्मीद कम थी। जापानी माताओं ने ब्रिटिश माताओं की तुलना में अपने बच्चों की उच्च शैक्षिक, आत्म.देखभाल और पर्यावरण स्वतंत्रता की अपेक्षाओं का प्रदर्शन किया। एशियाई भारतीय मूल के अप्रवासी माता–पिता अंशकालिक नौकरियों में अपने बच्चों को शामिल करने से बचते हैं क्योंकि वे उन्हें एक अच्छी शिक्षा से विचलित मानते हैं, इस प्रकार उन व्यवहारों को लागू करते हैं जो उनके बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए आवश्यक हैं (*हिक्की*, 2006)।

नींद की व्यवस्था में अंतर संस्कृतियों में पालन–पोषण के व्यवहार के अंतर को भी उजागर करता है। मात्सुमोतो और जुआंग (2008) बच्चों के साथ सोने के बारे में कई अमेरिकी माता–पिता के नकारात्मक रवैये के बारे में लिखते हैं; यह बच्चों के लिए परिवारों में अलग–अलग कमरे में रखने की प्रवृत्ति है जो आर्थिक रूप से स्थिर हैं। भारतीय माता.पिता, और समान संस्कृतियों वाले लोग, अक्सर इस प्रथा से प्रभावित होते हैं क्योंकि यह उपेक्षित प्रतीत होता है। वे ''नींद प्रशिक्षण'' पर साथ सोना पसंद करते हैं, खासकर शैशवावस्था के दौरान, ताकि एक मजबूत मातृ–शिशु संबंध (*इसहाक, एनी* एवं *प्रशांत*, 2014) का निर्माण किया जा सके। दिलचस्प बात यह है कि पूर्व.औद्योगिक यूरोप और अमेरिका (ब्रौन, 2017) में साथ–साथ सोना आम बात थी। इसलिए, एक संस्कृति के भीतर लालन–पालन के प्रत्यक्षित लक्ष्य एवं उन्हें प्राप्त करने का विचार समय के साथ बदल सकता है।

एनकल्चरेशन और समाजीकरण के लिए जिम्मेदार तात्कालिक परिवार में उनके भाई–बहन भी शामिल हैं। भाई–बहनों के बीच परस्पर समाजीकरण की प्रक्रिया पर अनुसंधान में जोर दिया जाता है (*अर्नस्ट* एवं *एंगस्ट*, 1983)। भाई–बहन अक्सर अपने विश्वासों और व्यवहारों के सेट पर एक.दूसरे के पास जाते हैं (*जुको–गोल्ड्रिंग*, 1995)। बड़ी संख्या में बच्चों वाले परिवारों में, बड़े भाई–बहन अपने छोटे भाइयों और बहनों की देखभाल करने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं (*मात्सुमोतो* और *जुआंग*, 2008)।

बच्चों की वृद्धि में भाई–बहनों की संख्या का प्रभाव के बारे में मिश्रित परिणाम प्रकट हुआ (*सलेम*, 2006)। भाई–बहनों की संख्या बढ़ने से पोषण संबंधी समस्या की संभावना बढ़ गई। इसी समय, बड़े भाई–बहन अपने छोटे भाइयों और बहनों के स्टंट के खिलाफ सुरक्षात्मक कारकों के रूप में कार्य करते हैं। हालांकि, देसाई (1995) के एक अध्ययन के अनुसार, अगर उनके दूरदराज के गांव में स्कूल नहीं होता तो छोटे भाई–बहनों को कोई फायदा नहीं होता। यह इस बिंदु पर प्रकाश डालता है कि एनकल्चरेशन एजेंट स्वतंत्र रूप से काम नहीं करते हैं और कभी–कभी केवल समाजीकरण को प्रभावित करने वाले कारकों पर बेहतर प्रभाव पड़ता है। भारत में

सड़क पर रहने वाले बच्चों (ज्यादातर हिंदू और मुसलमानों) का समाजीकरण से सम्बंधित लेख इंगित करता है कि उनका कामकाजी जीवन सुविधा प्राप्त लोगों की तुलना में बहुत कम उम्र में 6 से 9 वर्ष की उम्र के आसपास शुरू होता है (*माथुर*, 2009)। इस श्रेणी में छोटे बच्चे अक्सर अपने बड़े भाई–बहनों के साथ होते हैं, इस प्रकार यह अपमान के महत्वपूर्ण कारक होते हैं।

4.3.2.2 विस्तृत परिवार

बच्चे को विकसित करने में पूरे गांव का योगदान होता है। या कई गैर–यूरोपीय अमेरिकी संस्कृतियों में, यह काम कम से कम एक बड़ा परिवार लेता है जिसमें माता. पिता और उनके बच्चों से अधिक लोग होते हैं। कर्वे (1965) ने एक संयुक्त परिवार का वर्णन किया है, ''आमतौर पर एक छत के नीचे रहने वाले लोगों का एक समूह, जो एक ही रसोई में पका हुआ भोजन खाते हैं, जो आम संपत्ति रखते हैं और सामान्य पारिवारिक पूजा–पाठ में भाग लेते हैं और परस्पर एक दूसरे से संबंधित होते हैं विशेष किस्म के दयालु होते हैं। दयालु इस व्यापक परिभाषा में एक महत्वपूर्ण शब्द है। कई संस्कृतियाँ, विस्तारित परिवार को सांस्कृतिक विरासत के रूप में बाद की पीढ़ियों को स्थानांतरित करती हैं (*मात्सुमोतो* और *जुआंग*, 2008)।

अधिकांश पश्चिमी अध्ययन, विशेष रूप से लालन–पालन शैलियों पर, एकांकी परिवार और अक्सर अपनी माँ के साथ बच्चे के रिश्ते पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संयुक्त परिवार, दादा–दादी, चाचा–चाची और चचेरे भाइयों के साथ महत्वपूर्ण संबंध गतिशीलता जितना कि माता–पिता और भाई–बहनों के साथ होता है का प्रदर्शन करते हैं। अमेरिका में भी, दादी अक्सर परिवार में तब ज्यादा जुड़ जाती हैं जब उनकी बेटियाँ एकल माँ या किशोर माँ होती हैं (*गार्सिया कोल*, 1990)।

संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे पश्चिमी देशों में आप्रवासन के बाद भी अकल्चरेशन और पारिवारिक एकांकीकरण की प्रक्रिया के बाद, एशियाई भारतीय अमेरिकी संयुक्त परिवार के मूल्यों और शिष्टाचार को बनाए रखते हैं (*हिकी*, 2006)। संयुक्त परिवार में पलने.बढ़ने से बच्चों में अपनेपन की भावना पैदा होती है (उनके पास प्रचुर मात्रा में खेलने वाले होते हैं और आवश्यकता पड़ने पर प्रेम और गर्मजोशी प्रदान करते हैं (*घोष*, 1983)। यह बदले में, परिवार के प्रति वफादारी और एशियाई भारतीय बच्चों में प्राधिकार के लिए सम्मान को मजबूत करता है।

4.3.2.3 साथी समूह के मध्य संबंध

साथी समूह में ऐसे व्यक्तियों का एक छोटा समूह शामिल होता है, जो मित्रों के समान घनिष्ठ होते हैं, समान आयु वर्ग के होते हैं, और सामूहिक रूप से समान गतिविधियों में संलग्न होते हैं (*कास्त्रोगोवेनी*, 2002)। बचपन से ही, बच्चे अपनी उम्र के अन्य लोगों के साथ अंतर्क्रिया करते हैं जो उनके संभावित खिलाड़ी हो सकते हैं। अनाथालयों में, बच्चे ज्यादातर कई आयु वर्ग के साथियों के साथ बातचीत करते हैं, जहाँ बड़े बच्चे छोटे बच्चों की जिम्मेदारी लेते हैं। साथियों के साथ बातचीत की सीमा संस्कृति से संस्कृति में भिन्न हो सकती है; पश्चिमी और औद्योगिक संस्कृतियों ने अपने पूर्वी समकक्षों की तुलना में साथियों के भीतर अधिक सहभागिता देखी। यह सीमा व्यक्तियों के समाजीकरण के लिए सहकर्मी बातचीत के महत्व स्तर को निर्धारित करती है। साथी समूहव्यक्ति को वयस्क भागीदारी के बिना स्वायत्तता सीखने की अनुमति देते हैं, मुकाबला करने की रणनीतियाँ (*कास्त्रोगोवान्नी*, 2002), और पहचान.

निर्माण/पुनर्निर्माण (*काला*, 2002) सीखते हैं। निकोल एम हॉवर्ड (2004) के अनुसार, साथी समूह पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ कर सकते हैं लेकिन समस्याग्रस्त व्यवहारों को भी पूरक कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर सामान लिंग के लोगों के साथ बातचीत करते हैं, दूसरे लिंग से डिस्कनेक्ट करते हैं। यह बाद में किशोरावस्था और वयस्कता में भी दिख सकता आगे है क्योंकि इन व्यक्तियों को अपने स्वयं के लिंग के सदस्यों के साथ बातचीत करने में कौशल विकसित करने और विपरीत सेक्स संबंधों के लिए पर्याप्त कौशल नहीं है (*हनीश* एवं *फेब्स*, 2014)। सहकर्मी संबंधों की एक उप.प्रणाली दोस्ती है। यूनिस एवं स्मॉलर (1989) ने कहा कि घनिष्ठ मित्रता, सामाजिक संवेदनशीलता जैसे पारस्परिक संवेदनशीलता, पारस्परिकता, सहयोग, और बातचीत की सुविधा प्रदान करके कार्यात्मक लाभ प्रदान करती है, जो संस्कृति के अनुकूल हैं।

सलमान अख्तर (2009) ने पश्चिमी देशों में अप्रवासी बच्चों की दोस्ती का अन्वेषण किया, जो अकल्चरेशन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। सम–नृजातीय दोस्ती (अपने जातीय समूह के दोस्त) व्यक्ति को शांत करने का मातृत्व भूमिका अदा करते हैं, लेकिन नकारात्मक पक्ष पर, व्यक्तिनिष्ठता को बाधित करते हैं। विषम–नृजातीय मित्रता (अन्य नृजातीय समूहों से संबंध रखने वाले), अकल्चरेशन की प्रक्रिया के द्वारा पैतृक भूमिका निभाते हैं, लेकिन इसमें भावनात्मक संबंध का अभाव होता है। विशेष रूप से विषम–नृजातीय मित्रों, या सम–नृजातीय दोस्तों के परिणामस्वरूप व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक विकास धीमा हो जाता है।

4.3.2.4 शिक्षा

याद करें कि हमने बाल विकास पर भाई–बहनों के सकारात्मक प्रभावों के बारे में चर्चा की थी, जो इस बात पर निर्भर था कि इलाके में एक विद्यालय था। औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त कौशल और मूल्यों को सिखाकर समाज में व्यक्तियों के आत्मसातकरण में महत्वपूर्ण होती हैं। जॉन डेवी (1899, 1916) ने समाज के लिए प्रासंगिक शिक्षा की निम्नलिखित भूमिकाओं को चित्रित किया:

1) संस्कृति सम्प्रेषण
2) असमानता को कम करना
3) सामाजिक अनुकूलनशीलता और सामाजिक परिवर्तन
4) नए ज्ञान का अधिग्रहण
5) व्यक्तिगत विकास

गणित की उपलब्धि और क्षमताओं का क्रॉस–नेशनल अध्ययन इनमें सार्थक अंतर दिखाते हैं। गैरी (1996) का कहना है कि प्राथमिक नहीं, बल्कि द्वितीयक गणितीय क्षमता इन मतभेदों को प्रकट करती है। इसका मतलब यह है कि इस तरह के अंतर के लिए कारण सांस्कृतिक और सामाजिक कारक हैं, जैविक नहीं। पूर्वी एशियाई छात्रों की तुलना में अमेरिकी छात्र परिकलन में अधिक त्रुटियां करते हैं (*मिउरा, ओकामोटो, किम, स्टीयर*, और *फेयोल*, 1993)। यह संख्याओं में भाषायी अंतर के कारण हो सकता है, जापानी में 1 से 10 में अनूठे लेबल होते हैं, जबकि सभी संख्याओं में इन संख्याओं का संयोजन होता है (उदाहरण के लिए 11 ''दस-एक'') जबकि अंग्रेजी में, संख्या 1 से 19 और दर्शक की संख्या में अनोखे लेबेल होते हैं।

शिक्षण शैली में सांस्कृतिक अंतर भी गणितीय और अन्य शैक्षिक क्षमताओं में अंतर के लिए जिम्मेदार हो सकता है। यह पाया गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में, चीनी और जापानी शिक्षकों ने छात्रों के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं और छात्रों ने प्रतिदिन और प्रतिवर्ष बिताए गए घंटे के मामले में स्कूल में अधिक समय बिताया। कुछ संस्कृतियाँ प्रमुख रूप से एक उपदेशात्मक शिक्षण शैली का विकल्प चुनती हैं, जहाँ शिक्षक छात्रों को मौखिक रूप से जानकारी प्रदान करते हैं और छात्र इसे अपनी समझ और स्मृति के अनुसार प्राप्त करते हैं। वैकल्पिक रूप से, अन्य संस्कृतियों में प्रमुख रूप से अधिक गतिशील शिक्षक होते हैं जो छात्रों के साथ सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ छात्र स्वयं अवधारणाओं और दुनिया के कामकाज के सिद्धांतों को उजागर कर सकते हैं। अमेरिकी शिक्षण प्रणाली सही उत्तरों पर छात्रों की प्रशंसा करने में विश्वास करती है जबकि भारतीय, जापानी और ताइवान की संस्कृति छात्रों की गलतियों को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करती है।

अंत में, निश्चित रूप से, राष्ट्रों के भीतर और साथ ही राष्ट्रों में एक शिक्षा प्रणाली की पाठ्यक्रम सामग्री में सांस्कृतिक अंतर परिलक्षित होता है। किसी पाठ्यक्रम की संरचना, विषयवस्तु और मंशा शायद समाज में राजनीतिक धारा के साथ–साथ संस्कृति को भी आकार और संशोधित कर सकती है। इसका एक नकारात्मक उदाहरण त्रिपुरा में स्कूलों के पाठ्यक्रम पर जमातिया और गुंडेमेडा (2019) का अध्ययन है, जिसने राज्य में कई संस्कृतियों, विशेषकर आदिवासी समूहों को हाशिए पर लाने के लिए प्रोत्साहित किया। वे पाते हैं कि यद्यपि त्रिपुरा कई पहचान वाले लोगों के साथ एक राज्य है, शिक्षा प्रणाली उनका प्रतिनिधित्व करने में विफल रही है और इसके बजाय, एक अखंड पहचान को बनाए रखती है, बंगाली हिंदुओं द्वारा बंगाली को प्रशासनिक भाषा के रूप में एवं हिन्दू धर्म का मानकर उसका एकमार्गी बना दिया गया है। इस प्रकार शिक्षा, संस्कृति और समाज को आकार देने, पोषित करने तथा रूपांतरित करने में प्रमुख भूमिका अदा करती है। हालांकि, यह गुणवत्ता विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम संरचना को डिजाइन और कार्यान्वित करते समय सावधानी बरतने के लिए भी कहती है।

4.3.2.5 धर्म

काफी लंबे समय तक, धर्म और शिक्षा अलग–अलग नहीं थे। धार्मिक अधिवक्ता बच्चों को मूल्य के साथ–साथ शिक्षा और शैक्षिक संस्थानों ने धार्मिकता को प्रोत्साहित किया। प्राचीन इजराइल में यहूदी धर्म का धार्मिक पुस्तक के माध्यम से तोरा ने शिक्षा और साक्षरता को प्रोत्साहित किया (*कॉम्पैरे* एवं *पायने,* 1899)। हालांकि, स्कूलों ने केवल लड़कों को अनुमति दी थी । 622 ईस्वी में, मदीना में इस्लामिक मस्जिदों (अब सउदी अरब में; अल–हसनी, 2011) में स्कूल खोले गए थे। बहुत पहले, 1500 और 600 ईसा पूर्व के बीच, वेद और अन्य हिंदू शास्त्र प्राचीन भारतीय में शिक्षा के स्रोत थे जिसमें व्याकरण, रचना, छंद, तर्क और अन्य व्यावसायिक कौशल की शिक्षा पर बल था (*गुप्ता,* 2017)। गुरुकुल महत्वपूर्ण संस्थान थे, जहां ब्राह्मण छात्र घर लौटने से पहले लगभग बारह वर्ष तक ब्राह्मण शिक्षक के अधीन अध्ययन करते थे। जबकि उन्होंने कई जीवन मूल्यों को सिखाया, धर्म और इसका इतिहास तंत्र पर हावी रहा।

आधुनिक समय में भी, संस्कृति और/या परिवार में धार्मिकता के स्तर के आधार पर, धर्म समाजीकरण में प्रमुख भूमिका निभाता है। इंग्लैंड में बसे पंजाबी माता–पिता के लिए, धार्मिक अभ्यास अगली पीढ़ी के लिए भाषा और सिद्धांतों के महत्वपूर्ण वाहक हैं (*दोसांझ* और *घुमन,* 1997)। कुछ धर्म जैसे यहूदी धर्म में बार मिट्ज्वा जैसे समारोहों

के द्वारा और इस्लाम में रमजान के उपवास के दौरान किशोरावस्था में व्यक्तियों के वयस्क होने के लिए संक्रमण का जश्न मनाते हैं। अफ्रीका में धार्मिक विश्वास नैतिक विकास (*ओकोंकोव,* 1997) और इंग्लैंड में हिंदुओं और मुस्लिमों का आत्महत्या–दृष्टिकोण (*कमल* और *लोवेनथल,* 2002) के साथ एक मजबूत जुड़ाव व्याप्त हैं।

फोनेर एवं अल्बा (2008) ने पाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में ईसाई धर्म में परिवर्तित होने वाले व्यक्तियों के अकल्चरेशन प्रक्रिया में सकारात्मक परिणाम होता है। पहले से ही बहुसंख्यकों के धर्म से संबंधित होने पर जहां कोई पर्वशन करता है तो वह भी सामाजिक गतिशीलता में भी मदद करता है (*कैडेज* और *एक्लंड,* 2007)। हालांकि, मजबूत धार्मिकता किसी नई संस्कृति में आत्मसात करने पर नकारात्मक प्रभाव डालती है क्योंकि वे अपनी संस्कृतियों को प्राथमिकता देते हैं (*बोरुप* और *अहलिन,* 2011)।

स्व–मूल्यांकन प्रश्न I

निम्नांकित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1) एक समवयस्क समूह (पीयर ग्रुप) में एक ..... जो कि मित्रों के निकट होते हैं, समान आयुवर्ग के होते हैं, और सामूहिक रूप से समान गतिविधियों में संलग्न होते हैं।
2) अकल्चरेशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति .....।
3) ..... उस संस्कृति में होता है जहाँ हम पैदा होते हैं और संस्कृति के परिचित होने की प्रक्रिया जन्म के ठीक बाद शुरू होती है।
4) ..... एक गतिशील प्रणाली है जो किसी आबादी में औसत, मुख्यधारा और प्रतिनिधि प्रवृत्तियों का वर्णन करती है।
5) एक शिशु के व्यक्तित्व और उसके अन्य मनोवैज्ञानिक मेकअप पर सबसे पहला पर्यावरणीय प्रभाव ..... से आता है।

4.4 विभिन्न संस्कृतियों में आत्म (स्व)

एनपीआर के इनविजिबल पॉडकास्ट के एपिसोड में से एक केरेन बायरन नाम की एक महिला की कहानी से शुरू होता है, जिसका बायाँ हाथ बिना उसकी इच्छा या संज्ञानात्मक प्रयासों के हिट हो जाता है, एक आवेग या टिक जैसा नहीं होता है। वह एलियन हैंड सिंड्रोम के रूप में जानी जाने वाली एक संलक्षण से पीड़ित है, जो उसके मिरगी संबंधी दौरे को नियंत्रित करने के लिए उसके कॉर्पस कॉलोसुम (तंत्रिका तंतुओं का एक संग्रह जो बाएँ मस्तिष्क गोलार्द्ध को दाएँ से जोड़ता है) के शल्य क्रिया के माध्यम से हटाने के बाद उभरा। इसका मतलब है कि उसके दोनों गोलार्द्ध स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। उसकी टिप्पणियों के अनुसार, बायाँ हाथ उसे हर बार मारता है जब वह कुछ मानक रूप से गलत करता है, जैसे स्पष्ट भाषा का उपयोग करना। ऐसा लगता है जैसे उसके बाएँ हाथ में ''खुद का दिमाग'' है। इस कहानी को प्रसारित करने वाले एपिसोड को ''द कल्चर इनसाइड'' नाम दिया गया था।

संस्कृति केवल किसी खास समाज और देश जिसमें हम रहते हैं तक ही सीमित नहीं रहती है बल्कि हम इसके वाहक बन जाते हैं, जो अक्सर हमारी व्यक्तिगत संस्कृतियों के संदर्भ में अवधारणाओं और आंतरिक घटनाओं को समझने के लिए होता है। हमारी व्यक्तिगत संस्कृतियाँ हमारी आत्म.अवधारणाओं का एक हिस्सा हैं। वेर्ले और फसबेंडर

(2019) ने आत्म–अवधारणा को ''अधिगमित मनोवृत्तियों, विश्वासों, मूल्यांकन निर्णयों की जटिल, संगठित, और गत्यात्मक तंत्र के रूप में परिभाषित किया है।'' स्वयं की भावना मोटे तौर पर निम्न ढंग से वर्गीकृत की जा सकती है (*मार्क्स* और *किताया*, 1991):

व्यक्तिवादी समाजों में स्व की भावना: आमतौर पर पश्चिमी समाजों में प्रचलित है जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में। स्व की एक स्वतंत्र भावना स्वतंत्रत मूल्यों को आंतरिक बनाने का एक परिणाम है, जहाँ व्यक्ति जीवन में अधिक आत्म–केंद्रित होते हैं। व्यक्तिवादी संस्कृति समूह या सामूहिक लक्ष्यों, आत्म–बोध और ''सम्मिश्रण'' से अधिक व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्रोत्साहित करती है। वे अपने समाज के सदस्यों में व्यक्तिवादी या स्वतंत्र भावना को बढ़ावा देते हैं। उपलब्धियों के लिए व्यक्ति अपने गुणों, विशेषताओं और निर्णयों को श्रेय देते हैं। एक व्यक्तिवादी समाज के लोगों में विश्वास का व्यापक दायरा पाया गया है, जिन्हें आउटग्रुप सदस्य माना जा सकता है (*होर्न*, 2015)।

सामूहिकवादी समाजों में स्व की भावना : पूर्वी और अन्य गैर–यूरोपीय संस्कृतियों को आमतौर पर एक अधिक निर्भर जीवन शैली और लक्ष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए माना जाता है, अर्थात स्व का अन्योन्याश्रित भाव। वे समूह के प्रति अनुरूपता और वफादारी को महत्व देते हैं। समूह के सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामूहिक सामंजस्य बनाए रखें और स्वयं के हितों पर समूह के हितों को प्राथमिकता दें (*हॉफस्टेड*, 2001)। होर्ने (2015) ने पाया कि सामूहिक समाज में, व्यक्तियों के विश्वास का एक संकुचित दायरा होता है और वे बाहरी समूहों के प्रति अधिक भेदभाव करते हैं। वे समूह के व्यक्तियों के लिए अपने विश्वास को रोकते हैं।

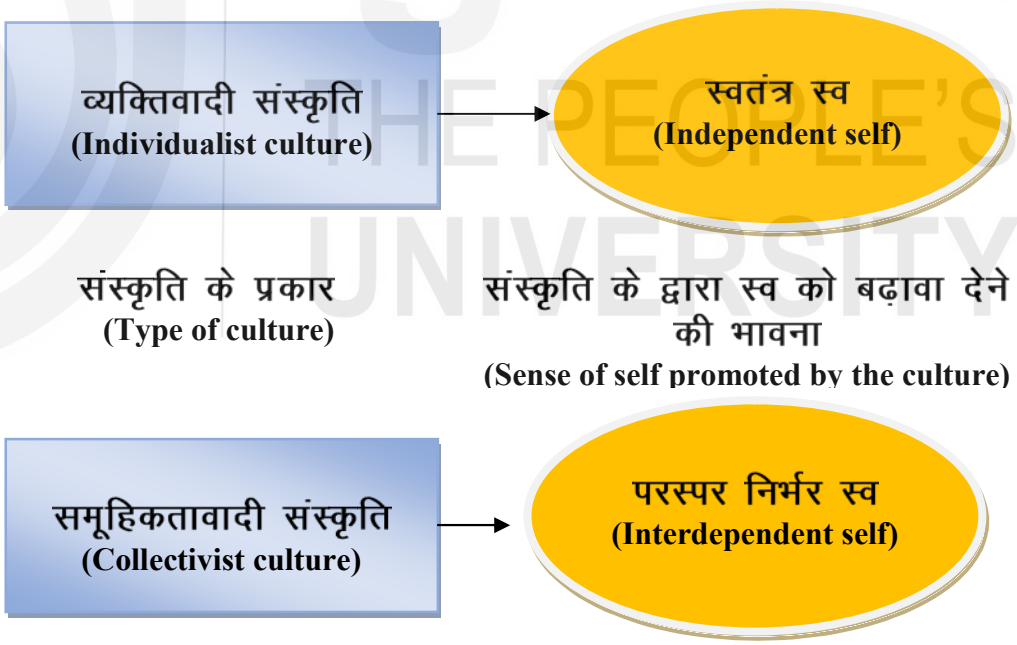

चित्र 4.1: स्व को बढ़ावा देने की भावना तथा संस्कृति के प्रकार

हालांकि, इन श्रेणियों की सीमाएँ अच्छी तरह से परिभाषित नहीं हैं। एक समाज को एक या दूसरे के रूप में वर्गीकृत करने की आवश्यकता नहीं है। भारत को प्रमुख रूप से एक सामूहिक समाज माना जाता है। हालांकि, आगे के अध्ययन में पाया गया है कि यह अत्यधिक स्थिति–आधारित होती है (*त्रिपाठी*, 1988)। उदाहरण के लिए, 2001 के एक अध्ययन में, छात्रों को दोस्तों के साथ बातचीत करने, परिवार के साथ संबंध बनाने और वरिष्ठों के साथ संलग्न होने पर एक सामूहिक दृष्टिकोण था। हालांकि, जब व्यक्तिगत मुद्दों और मामलों को मुख्य बनाया गया था, तो उनके पास एक

व्यक्तिपरक अभिविन्यास था (*सिन्हा, सिन्हा, वर्मा,* और *सिन्हा,* 2001)। लैंगिक अंतर पाया गया, जहाँ भारतीय महिलाओं में सामूहिक अभिविन्यास था (*झा* और *सिंह,* 2011)। यह जटिल व्यक्तिवादी.सामूहिकतावादी सह.अस्तित्व भारत में संभव है क्योंकि भारतीय मानस में विरोधाभासों और विसंगतियों को सहन करने की उच्च क्षमता है, इस प्रकार, यह एक व्यक्तिवादी सामूहिक समाज बन जाता है (*सिन्हा,* 1988)। इसलिए, भारतीय जनसंख्या में पारंपरिक रूप से सामूहिक और पश्चिमी व्यक्तिवाद दोनों का एकीकरण देखा गया है।

4.4.1 संस्कृतियों में विभिन्न सेल्फ कन्स्ट्रुअल के परिणाम

मात्सुमोतो और जुआंग (2008) ने नीचे दी गई तालिका में दो अलग.अलग आत्म. बाधाओं के लिए संज्ञानात्मक, भावनात्मक और प्रेरक परिणामों को चित्रित किया है। उन्होंने व्यक्तिवादी और सामूहिक समाजों के बीच तुलना करने के लिए 7 क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया। इन क्षेत्रों में आत्म–बोध, सामाजिक स्पष्टीकरण, प्राप्त करने की प्रेरणा, आत्म–संवर्धन, भावना का सामाजिक निहितार्थ, सामाजिक निहितार्थ और स्वदेशी भावनाएँ, और खुशी शामिल हैं।

तालिका 4.1 : मात्सुमोतो और जुआंग (2008) द्वारा वर्णित व्यक्तिवादी और सामूहिक आत्म–प्रतिबंधों के परिणामों का सारांश

क्षेत्र	व्यक्तिवाद के लिए परिणाम	सामूहिकता के लिए परिणाम
आत्म–प्रत्यक्षण	स्व का प्रत्यक्षण आंतरिक विशेषताएँः कौशल और व्यक्तिगत शीलगुण के रूप में करना।	स्व का प्रत्यक्षण अपने सामाजिक संबंधों के संदर्भ में करना।
सामाजिक स्पष्टीकरण	दूसरों के व्यक्तिवाद की कल्पना और व्यवहार के लिए शीलगुण कारकों को दोषी ठहराना, बड़े पैमाने पर स्थितिजन्य नियंत्रण को अनदेखा करना।	विशिष्ट संदर्भ में दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करना और उन्हें स्थितिजन्य कारकों के पर गुणारोपित करना।
उपलब्धि के लिए प्रेरणा	सफलता के लिए प्रयासरत व्यक्तिगत लक्ष्यों से जुड़े रहने की इच्छा। संबद्धता अभिविन्यास से असंबंधित उपलब्धि अभिविन्यास।	संबद्धता अभिविन्यास से संबंधित उपलब्धि अभिविन्यास, जिसमें सामाजिक लक्ष्य दूसरों की अपेक्षाएँ और दायित्व शामिल होती है।
स्व वृद्धि	स्पष्ट आत्म–वृद्धि। व्यक्तिगत सफलता के लिए आंतरिक कारकों पर और विफलताओं के लिए बाहा कारकों पर गुणारोपण (आत्म–सेवी पूर्वाग्रह)।	व्यक्त परिवेश में, आत्म–सेवी पूर्वाग्रह के विपरीत प्रदर्शन। अव्यक्त आत्म–वृद्धि पाई जाती है।
संवेग का सामाजिक	सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाएँ : सफलता के कारण	सामाजिक रूप से लगी हुई भावनाएँ : सकारात्मक–स्नेह

निहितार्थ	गर्व और वर्चस्व (सकारात्मक), और कमियों से क्रोध और कुंठा (नकारात्मक)।	और सम्मान, ऋणात्मक, ऋणग्रस्तता और अपराध बोध
सामाजिक निहितार्थ और स्वदेशी संवेग	भावनाओं के अधिक व्यक्तिगत/निजी पहलुओं विशिष्ट होते हैं और इन्हें संवर्धित किया जाता है, हालांकि सामाजिक गुण मौजूद रहता है।	भावनाओं के सामाजिक और सार्वजनिक पहलुओं से संबंधित कुछ विशिष्ट, स्वदेशी भावनाओं को देखा जाता है।
खुशी	खुशी या सामान्य अच्छी भावनाएँ सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाओं के साथ अधिक जुड़ी हुई हैं।	खुशी सामाजिक रूप से जुड़ी भावनाओं के साथ प्रमुखता से जुड़ी हुई हैं।

कोई स्वयं का कैसे प्रत्यक्षण करता है (स्वयं की धारणा), संस्कृति का एक महत्वपूर्ण उत्पाद है, जिसमे वे बड़े होते हैं। व्यक्तिवादी समाजों के सदस्य अपने कथित कौशल और व्यक्तित्व लक्षणों के आधार पर खुद को लगातार विभिन्न संदर्भों में देखने में सक्षम होते हैं। यह पूर्वी समाजों में अधिक कठिन कार्य हो जाता है, जहाँ आत्म–धारणा संदर्भ के साथ बदलती है। स्व–अवधारणा पर अंतःसांस्कृतिक शोध यह दर्शाता है कि अमेरिकियों ने अधिक स्व.मूल्यांकनत्मक बयानों पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि भारतीयों ने अपनी सामाजिक पहचान (*धवन, रोसमैन, नायडू, कोमिला,* और *रेटटेक,* 1995) पर काफी जोर दिया।

सामाजिक स्पष्टीकरण का तात्पर्य किसी की समझ और दूसरों के व्यवहार के गुनरोपण से है। हाइडर (1958) ने बताया कि लोग व्यवहार के लिए शीलगुण कारकों (अभिनेता की आंतरिक विशेषताओं जैसे व्यक्तित्व) या स्थितिजन्य कारकों (बाहरी या पर्यावरणीय कारक अभिनेता के नियंत्रण से बाहर) पर गुणरोपण करते हैं। व्यक्तिवादी समाज के सदस्य दूसरों के व्यवहार को व्यक्तिवाद पर और शीलगुण कारकों पर गुणरोपण करते हैं जबकि सामूहिकता में इसके विपरीत प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, भारतीय अक्सर अमूर्त उद्देश्यों के बारे में सोचने में असमर्थ होते हैं और दूसरों के व्यवहार के लिए स्थितिजन्य विवरण प्रदान करते हैं, जबकि अमेरिकी इन कारणों की अनदेखी करते हैं और शीलगुण कारणों (*मिलर,* 1984) पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सागी, एलिसूर, और यामूची (1996) ने पाया कि जापान जैसे सामूहिक समाजों के प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत उपलब्धि अभिविन्यास को हंगरी जैसे व्यक्तिवादी समाजों की तुलना में कम प्रदर्शित किया। पूर्व के समाजों में सामूहिक उपलब्धि की प्रवृत्ति अधिक पाई गई। प्राप्त करने की प्रेरणा व्यक्तिवादी समाजों में एक व्यक्ति की व्यक्तिगत वृद्धि से भी संबंधित है, लेकिन सामूहिक समाजों में यह सामाजिक लक्ष्यों, जैसे कि अनिवार्य भावनाओं के लिए जाता है। तुर्की जैसी संस्कृतियों में, उपलब्धि प्रेरणा सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों तत्वों का अनुसरण करती है (*फ़ेटल* एंड *क्ले,* 1993)।

एकर और विलियम्स (1998) अहंकार–केंद्रित बनाम अन्य.केंद्रित भावनाओं के बारे में बात करते हैं। उन्होंने बताया कि व्यक्तिवादी समाजों के सदस्य (अमेरिका) अहं–केंद्रित भावनाओं जैसे कि गर्व और क्रोध (सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाओं के रूप में भी कहा जाता है (*किटायमा, मार्कस* और *कुरोकावा,* 1993) को और अधिक तीव्रता से

महसूस करते हैं। वैकल्पिक रूप से, सामूहिक समाज के सदस्य (जापान) अन्य–केंद्रित भावनाओं को अधिक तीव्रता से महसूस करते हैं, जैसे कि सम्मान, मित्रता (सामाजिक रूप से संलग्न भावनाएँ)। सामान्य और अधिक सार्वभौमिक भावनाओं को विभिन्न तीव्रता की अभिव्यक्तियों के साथ महसूस किया जा सकता है, और अलग.अलग संस्कृतियों में सामाजिक स्वीकृति के संदर्भ में भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, ओगारकोवा, सोरियानो और ग्लैडकोवा (2016) के एक अध्ययन में अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी भाषाओं में गुस्से के रूपकों का पता लगाया गया। अंग्रेजी भाषा ने क्रोध के अधिक तीव्र, अभिव्यंजक और असम्बद्ध संस्करण प्रदर्शित किए, जबकि अन्य दो भाषाओं की तुलना में अनुभव और प्रदर्शन की उच्च प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया। क्रोध का कारण स्थितिजन्य की तुलना में आंतरिक (शीलगुण) पाया गया, और अंग्रेजी में अधिक सामाजिक रूप से स्वीकार किया गया।

इसके अलावा, स्वदेशी भावनाएँ जो सामूहिक समाजों के लिए अद्वितीय हैं, सार्वजनिक पहलुओं से भी संबंधित हैं। जैसे अमाए (*दोई,* 1973) एक स्वदेशी जापानी भावना है जो प्राधिकरी के आँकड़ों पर निर्भरता और उनकी स्वीकृति, परोपकार और भोग के लिए तड़प को संदर्भित करता है। यह ध्यान देने योग्य है; हालांकि, एकर और विलियम्स ने पाया कि अन्य–केंद्रित भावनात्मक अपीलों ने स्वय–.केंद्रित भावनात्मक अपील के उपयोग की तुलना में व्यक्तिवादी समाजों के सदस्यों को मनाने में शायद उनकी नवीनता के कारण बहुत बेहतर काम किया। समान कारणों से सामूहिक समाजों में विपरीत पाया गया।

दिलचस्प बात यह है कि, सामूहिकतावादी समाजों की तुलना में उच्च व्यक्तिवादी समाजों में खुशी का स्तर काफी अधिक पाया गया (*सुह* और *ओशि,* 2002)। इसके संभावित कारण उनके सामाजिक कुशल क्षेम (एस डब्ल्यू बी) के लिए सांप्रदायिक संबंधों पर सामूहिकवादी सदस्यों की निर्भरता है, जबकि व्यक्तिवादी सदस्यों (*ये, एनजी, लियान,* 2014; *सूह* एवं *ओशि,* 2002) के व्यक्तिगत प्रयासों के साथ सामाजिक कुशल क्षेम (एस डब्ल्यू बी) का सीधा संबंध है। सरल शब्दों में, सामाजिक रूप से व्यस्त भावनाएं सामूहिकतावादी समाजों में खुशी के साथ जुड़ी हुई हैं, जबकि सामाजिक रूप से विच्छेदित भावनाएँ व्यक्तिवादी समाजों में के साथ जुड़ी हुई हैं।

4.4.2 बहुसांस्कृतिक पहचान का मामला

परिवहन और वैश्वीकरण के तेज तरीकों ने एक ऐसे युग को जन्म दिया जहाँ व्यक्ति अपने मूल समाजों तक ही सीमित नहीं थे। इसने पर्यटन और प्रवास के माध्यम से प्रत्यक्ष अंतर–सांस्कृतिक प्रदर्शन का एक बड़ा अवसर प्रदान किया। यह एक्सपोजर नई भाषाओं, आदतों और सामाजिक शिष्टाचार को चुनने की भी अनुमति देता है। विशेष रूप से अप्रवासियों में, एक अस्वाभाविक पहचान को बनाए नहीं रखा जाता है क्योंकि वे एक अलग संस्कृति में एक छलांग लगाते हैं, बल्कि उन समाजों के मूल्यों और आदतों को भी प्रभावित करते हैं जिनमें वे मूल रूप से संस्कृतनिष्ठ हुए। एक अलग जाति या धर्म के परिवारों में गोद लिए गए बच्चे भी कई सांस्कृतिक पहचान रख सकते हैं।

बहुसांस्कृतिक पहचान का अध्ययन करने के लिए, हांग, मॉरिस और बेनेट–मार्टिनेज (2016) ने तीन स्तरों पर अनुसंधान का अवलोकन कियाः अन्तरा–व्यक्तिगत, अन्तर. व्यक्तिगत, और सामूहिक।

4.4.2.1 अंतरा–वैयक्तिक स्तर पर

बहुल संस्कृतियों के साथ सक्षम पहचान को मनोवैज्ञानिक के साथ–साथ सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों में समायोजन के लिए सकारात्मक परिणाम पाए गए हैं (*मॉरिस, चिउ,* एवं *लियू,* 2015)। हॉंग एवं उनके सहयोगियों ने अनुमान लगाया गया है कि सकारात्मक एनकल्चरेशन से इस तरह के परिणाम आ सकते हैं जो आंतरिक कारकों (जैसे द्विभाषी प्रवीणता एवं मजबूत सामाजिक समर्थन) और बाहरी कारकों (जैसे पूर्वाग्रह को हतोत्साहित करने वाली राज्य की नीतियाँ) का परिणाम हो सकती हैं। द्विसांस्कृतिक व्यक्तियों के बीच मध्य अंतर इन पदों में देखा जाता है (i) दो संस्कृतियों के मध्य में दूरी या प्रत्यक्षित विच्छेद (ii) दो संस्कृतियों के बीच अंतर्द्वंद्व (प्रत्यक्षित)। सीधे तौर पर कहा जाए तो, न्यून दूरी और कम अंतर्द्वंद्व के मध्य द्विसांस्कृतिक व्यक्तियों के भीतर चिंता कम हो जाती है (*हिर्श* एवं *कांग,* 2015)।

4.4.2.2 अंतर–वैयक्तिक स्तर पर

अंतर–वैयक्तिक स्तर का प्रभाव व्यापक रूप उस पहचान को संदर्भित करता है, जिसमें लोग ध्यान केंद्रित करते हैं जब बहुसांस्कृतिक पहचान के लोगों का सामना होता है। किसी की पहचान के बारे में स्वयं और दूसरों की धारणाओं में विसंगतियाँ कठिनाइयों को जन्म देगी (*वाइली* एवं *ज्चूक्स,* 2010; *सांचेज, शिह* एवं *विल्सन,* 2014)। बहुसांस्कृतिक पहचान के लोग अक्सर उप–जातीय समूहों से संबंधित अन्य व्यक्तियों से अस्वीकृति या संकोच का सामना करते हैं। इसके परिणामस्वरूप निम्न आत्मसम्मान, जुड़ाव की भावना (सांचेज, 2010 *टाउनसेंड, मार्क्स,* एवं *बर्ग्सिकर,* 2009) और खराब शैक्षणिक प्रदर्शन (*मिस्त्री, कॉन्ट्रेरास,* एवं *पुफाल–जोन्स,* 2014)। पहचान स्विचिंग और/या पहचान पुनर्परिभाषा का उपयोग करते हुए व्यक्ति अपनी बहुसांस्कृतिक पहचान के कारण भेदभाव से निपटते हैं:

पहचान पुनर्परिभाषा: लक्षित अस्मिता के सकारात्मक गुणों को भुनाना ताकि सकारात्मक संघों का निर्माण हो और उक्त पहचान के बारे में बेहतर महसूस हो।

अस्मिता बदलाव: कम असुरक्षित या अधिक सकारात्मक रूप से देखी जाने वाली पहचान की तरफ बदलाव।

4.4.2.3 सामूहिक स्तर पर

बहुसांस्कृतिक समाजों के संदर्भ में दो नीतियों पर चर्चा की जाती है: बहुसंस्कृतिवादी नीतियाँ और अंतःसंस्कृतिवादी नीतियाँ:

बहुसंस्कृतिवादी नीतियाँ परंपराओं और समुदायों से संबंधित अपने मूल सार में कई संस्कृतियों के संरक्षण पर जोर देती हैं। हालांकि, यह उन व्यक्तियों के आत्मसम्मान के लिए सकारात्मक होता है जिनकी जातीय अल्पसंख्यक से उच्च पहचान है (*वेरकुएंत,* 2009), यह रूढ़िवादीता को प्रबल करने के जोखिम में आता है (*गुटिएर्रे* एंड *उन्जुएटा,* 2010)। अंतः संस्कृतिवादी नीतियाँ बहुसांस्कृतिक नीतियों से असंतोष का परिणाम हैं क्योंकि बाद में राष्ट्रीय सद्भाव में बाधा आ सकती है (*रिट्ज, ब्रेटन, डायोन,* एंड *डायोन,* 2009)। अंतर संस्कृतिवाद अंतरसमूह संपर्क एवं नम्यता को प्रोत्साहित करता है जैसाकि यह अंतर सांस्कृतिक एक्सपोजर से प्रभावित होता है। उनका मानना है कि

संस्कृतियाँ ऐतिहासिक रूप से तरल (*मॉरिस, चिउ* और *लियू,* 2015) न कि कठोर रही हैं, क्योंकि वे विभिन्न संस्कृतियों, प्रौद्योगिकियों या अन्य नवीनताओं के संपर्क में थे।

स्व–मूल्यांकन प्रश्न II

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

1) भारत को प्रमुख रूप से एक ..... समाज माना जाता रहा है।

2) ..... से तात्पर्य दूसरों के व्यवहार के बारे में किसी व्यक्ति की समझ एवं गुणारोपण है ।

3) हमारी ..... हमारी आत्म.संप्रत्ययों का एक हिस्सा हैं।

4) ..... इंटरग्रुप संपर्क और अपनी सांस्कृतिक पहचान के लचीलेपन को प्रोत्साहित करता है जैसा कि इंटरकल्चरल एक्सपोजर से प्रभावित होता है।

5) समूह के सदस्य ..... समाज से अपेक्षा की जाती है कि वे सामूहिक सामंजस्य बनाए रखें और स्व.हितों पर समूह के हितों को प्राथमिकता दें।

4.5 विभिन्न संस्कृतियों में सामाजिक व्यवहार

कई अखबारों के लेख (जैसे, आउटलुक वेब ब्यूरो, 2018), ब्लॉग और फोरम भारतीयों के गन्दगी करने के बारे में बहस करते हैं। कई लोग मानते हैं कि भारत में जो लोग गलियों को गन्दा करते रहते हैं वही लोग जब देश–विदेश जाते हैं तो अच्छी तरह से व्यवहार करते हैं और कर्तव्यनिष्ठ हो जाते हैं। व्यवहार में सामंजस्य या विसंगतियाँ कई सामाजिक चरों पर निर्भर करती हैं, इस मामले में, शायद, भारत में कूड़े सम्बंधित गंदगी के व्यवहार की सामाजिक स्वीकार्यता है।

संस्कृति का इस बात पर बहुत नियंत्रण होता है कि कैसे समाज के सदस्य एक–दूसरे के साथ बातचीत, बंधन या अंतःक्रिया करते हैं और साथ ही साथ बाह्य–समूह के साथ कैसे अंतर्क्रिया करते हैं। इस खंड की शुरुआत में शब्द अन्तःसमूह और वाह्य–समूह से परिचित होना कार्यात्मक होगा, क्योंकि उनका उपयोग अक्सर किया जाएगा। मास्लो (1968), अपनी आवश्यकताओं के श्रेणीबद्ध मॉडल में, महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक के रूप में संबंधन की आवश्यकता का उल्लेख करता है, एक सामाजिक समूह में स्वीकृति और संबद्धता की भावना महसूस करता है।

अन्तःसमूहः वह समूह जिसके साथ हम खुद को जोड़ते हैं एवं उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, हमारे धार्मिक समुदाय, राष्ट्र, परिवार, गाना बजाने वालों का समूह, फुटबॉल टीम, इत्यादि।

वाह्य समूहः ऐसा समूह जिससे हम खुद को नहीं जोड़ पाते अथवा जिसके साथ जुड़ाव नहीं महसूस होता।

व्यक्ति आमतौर पर कई अन्तःसमूहों के हिस्सा होते है। कुछ समूह सदस्यता हमारे लिए दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती हैं (*बर्नस्टीन,* 2015)। इसके अलावा, कुछ समूह की सदस्यताएँ अन्य की तुलना में प्रमुख होती हैं और/या किसी अन्य

समय के विपरीत एक खास समय में ज्यादा प्रमुख हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, रूढ़िगत रूप से, एशियाई लोगों को गणित में अच्छा माना जाता है, जबकि महिलाओं को उसी मामले में अक्षम माना जाता है। किसी समूह के रूढ़ियुक्ति के बारे में सजग होने से उन रूढ़ियों को मजबूत किया जा सकता है। शिह, पिटिंस्की, एवं अंबाडी (1999) यह जानना चाहते थे कि एशियाई महिलाएँ गणितीय कार्य पर कैसा प्रदर्शन करेंगी जब उनकी एशियाई पहचान को उनकी लिंग पहचान की तुलना में उनके लिए प्रमुख बनाया गया था। परिणामों से पता चला कि एशियाई पहचान (अधिक सक्षम पहचान) को और अधिक प्रमुख बनाना प्रतिभागियों के गणितीय प्रदर्शन को बढ़ाता है, जबकि महिला की पहचान को ज्यादा स्पष्ट करने पर, उनके प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न हुई। गणितीय प्रदर्शन, जाहिर है, एक सामाजिक व्यवहार नहीं है, कम से कम इस संदर्भ में। हालांकि, उदाहरण यह समझने का कार्य करती है कि समूह के बारे में समूह की प्रमुखता और विद्यमान प्रत्यक्षण स्थिति के आधार पर हमारे व्यवहार को कैसे प्रभावित कर सकती हैं।

यह खंड इस बात पर प्रकाश डालेगी कि संस्कृति किस प्रकार सामाजिक मेल–मिलाप में व्यवहार को प्रभावित कर सकती है, समूह अंतःक्रिया गतिकी, व्यक्ति का प्रत्यक्षण, व्यक्तिवादी–सामूहिकवादी मतभेदों, गुणारोपण, आक्रामकता और निकट संबंधों के विषयों की खोज कर सकती है।

4.5.1 समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतःसांस्कृतिक विभेद

समूह की सदस्यता की स्थिरता संस्कृति के अनुसार भिन्न होती है। उत्तरी अमेरिकियों में आमतौर पर एशियाई संस्कृति के सदस्यों की तुलना में अधिक स्थिर अन्तःसमूह एवं वाह्यसमूह सदस्यता होती है (*मात्सुमोतो* एवं *जुआंग*, 2008)।

जैसा कि अध्याय में पहले प्रदर्शित किया गया है कि, सामूहिकवादी संस्कृतियाँ अपने व्यक्तिवादी संस्कृतियों की तुलना में अपने अन्तःसमूह एवं वाह्यसमूह सदस्यों के बीच में कड़ा विभेद प्रस्तुत करती हैं, (*ट्रीअन्डिस*, 1988)। व्यक्तिवादी संस्कृतियों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में इसका नकारात्मक प्रभाव जापान और कोरिया जैसे समूहवादी संस्कृतियों में वाह्यसमूह के सदस्यों या अजनबियों के साथ संवाद करने में कठिनाइयों में परिलक्षित होता है (*गुडीकुंस्ट, यून*, एवं *निशिदा*, 1987)। इसके अलावा, सामूहिकवादी संस्कृतियों में वाह्यसमूह के साथ संचार का निजीकरण स्थितिजन्य कारकों पर अत्यधिक निर्भर करता है, जबकि स्थितिजन्य माँगें व्यक्तिवादी संस्कृतियों में सामान मामलों में उतनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं अदा करती हैं।

अपने स्वयं के सदस्यों के साथ संचार और अंतःक्रिया के संबंध में, सामूहिकवादियों (हांगकांग, चीन के छात्र) में व्यक्तिवादियों (अमेरिकी छात्रों) की तुलना में एक–दूसरे के साथ लंबे समय तक अंतर्क्रिया होती थी, हालांकि पूर्व वाले में कम बार अंतःक्रिया होती थी (*व्हीलर, रीस* एवं *बॉन्ड*, 1989)। चूँकि सामूहिकतावादी, व्यक्तिवादियों की तुलना में कम अंतःसमूहों से संबंधित होते हैं, वे अपने मौजूदा अंतःसमूह के प्रति बढ़ी हुई प्रतिबद्धता के माध्यम से क्षतिपूर्ति करते हैं और समूह पहचान/जुड़ाव की अधिक समझ रखते हैं। सामूहिकवादी, संसक्ति और सद्भाव को महत्व देते हैं जिसके कारण वे सामाजिक अनुरूपता के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं (*मात्सुमोतो* एवं *जुआंग*, 2008)।

एन्सवर्थ और उसके सहयोगियों (1978) द्वारा समूह के संदर्भ में आशक्ति सिद्धांत और शैलियों का अध्ययन किया गया है (*उदा. रोम* एवं *मिकुलिनसर*, 2003; *डीमार्को* एवं *न्यूहैजर*, 2018)। सरल पदों में, समूह आशक्ति दुश्चिंता अन्तःसमूह में स्वीकार नहीं किए जाने की असुरक्षा से संबंधित है, जबकि समूह आशक्ति परिहार उनके अन्तःसमूह में निर्भरता से परहेज (समूह के लिए जुड़ाव महसूस करने के बावजूद) करने की कोशिश द्वारा परिलक्षित होती है। इस प्रकार, दुश्चिंता समूह के सदस्य, ऐसा व्यवहार को प्रकट करते हैं, जो उनकी समूह के साथ अंतरंगता को बढ़ाता है, जबकि परिहार समूह के सदस्य अन्तःसमूह से अपनी दूरी बनाए रखना पसंद करते हैं (*स्मिथ* एवं उनके सहयोगी, 1999)। समूह के साथ घनिष्ठता बढ़ाने वाले व्यवहार में निम्न बातें शामिल हो सकती हैं (जैसा कि *मात्सुमोतो* और जुआंग, 2008; में परिभाषित किया गया है):

अनुरूपता: वास्तविक या प्रत्यक्षित सामाजिक दबाव का पालन करना।

अनुपालन: स्पष्ट रूप से (सार्वजनिक रूप से प्रकट व्यवहार में) सामाजिक दबाव का पालन करना, हालांकि निजी विश्वास अपरिवर्तित रह सकते हैं।

आज्ञाकारिता: किसी प्राधिकरी से प्राप्त कुछ प्रत्यक्ष निर्देशों या आदेशों का अनुपालन करना।

सहयोग: एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह के सदस्यों की एक साथ काम करने की क्षमता।

डीमार्को एवं न्यूहैजर, 2018 ने समूह में आशक्ति शैलियों और निवेश के बीच संबंधों की जाँच की। प्रत्याशित रूप से, यह पाया गया कि परिहार समूह की आशक्ति शैली निचले समूह निवेश से संबंधित थी जबकि दुश्चिन्तित समूह के लगाव की शैली उच्च समूह निवेश से संबंधित थी।

4.5.2 अंतःसमूह पहचान बनाम अंतःसमूह पक्षपात

सामाजिक अस्मिता सिद्धांत (*ताजफेल*, 1978) इस धारणा पर आधारित है कि सामाजिक समूहों के संबंध में अस्मिता निर्माण से व्यक्ति की स्वयं की अस्मिता भी मजबूत और संरक्षित होती है। सिद्धांत अंतःसमूह अंतर्द्वंद्व को समूहआधारित आत्म–परिभाषाओं के एक प्रकार्य के रूप में एवं इसी नजरिए से देखता है (*इस्लाम*, 2014)। अंतःसमूह पक्षपात इस संभावना को संदर्भित करता है कि कोई अपने समूह का पक्ष लेगा और दूसरे समूह का बहिष्कार करेगा। ताजफेल और उनके सहयोगी (1971) ने एक न्यूनतम समूह प्रतिमान का उपयोग करके प्रदर्शन किया कि लोगों को केवल अमूर्त समूहों में वर्गीकृत करना ही अंतःसमूह पक्षपात उत्पन्न होने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने सहभागियों को एक स्क्रीन पर प्रदर्शित डॉट्स की संख्या के बारे में उनकी सटीकता/अनुमान के आधार पर दो समूहों में विभाजित किया। जब लोगों से धन आवंटित करने के लिए कहा जाता है (जबकि बताया गया था कि इससे उन्हें कितना पैसा प्राप्त होगा, यह प्रभावित नहीं होगा), सहभागियों ने अभी भी किसी व्यक्तिगत लाभ या हानि के अभाव में समूह के सदस्यों को अधिक धन आवंटित करने का विकल्प चुना।

जबकि कई पूर्व अध्ययनों से पता चलता है कि छोटे समूहों को बड़े समूहों में वर्गीकृत करना (उदाहरण के लिए, लड़कियों की फुटबॉल टीम और लड़कों की फुटबॉल टीम एक स्कूल फुटबॉल टीम में) अंतरसमूह पक्षपात को कम कर देगी (जैसे, *गर्टनर* एवं उनके सहयोगी, 1990), नए अध्ययन ठीक इसके विपरीत प्रभाव का सुझाव देते हैं (उदाहरण के लिए, *हार्नसे* एवं *हॉग*, 2000; *टर्नर* एवं *क्रिस्प*, 2010)। टर्नर और क्रिस्प

ने पुष्टि की कि मजबूत अन्तःसमूह की पहचान, व्यापक समूहों में पुनर्वर्गीकरण के बाद अंतःसमूह पक्षपात का पूर्वकथन करेगी। वे प्रस्ताव करते हैं कि इस घटना का कारण किसी व्यक्ति को स्वयं को अलग करने और सकारात्मक रूप से मूल्यवान समूह से संबंधित होने या समूह को सकारात्मक रूप से देखने की आवश्यकता हो सकती है। यदि किसी के समूह को दूसरे समूह में मिला दिया जाता है, जो अन्य समूह कुछ महत्वपूर्ण कारकों के बराबर हैं, तो यह आगे सकारात्मक अंतर की आवश्यकता को ट्रिगर करेगा, इस प्रकार, अंतर समूह संघर्ष (*ब्राउन* एवं *वेड,* 1987) को बढ़ाता है। यही कारण हो सकता है कि फासीवाद को राष्ट्रवाद का एक कट्टरपंथी अवतार कहा जाता है, जहाँ (चरम) राष्ट्रवाद नस्लवाद और हिंसा की बढ़ावा देता है (*टर्नर,* 1975, *पीटर्स,* 2018)।

4.5.3 गुणारोपण

मनुष्यों में अपने और दूसरों के व्यक्तित्वों/व्यवहारों और उनके जीवन या सामान्य घटनाओं के कारणों और स्पष्टीकरणों को खोजने की प्रवृत्ति होती है। इस तरह के स्पष्टीकरण को गुणारोपण के रूप में जाना जाता है। यह ज्योतिष में लोगों के विश्वास और हमारे द्वारा प्राप्त आनंद को बज फीड पर्सनैलिटी क्विज से समझा सकता है। आप परीक्षाओं में अपनी असफलता का कारण परीक्षक की सख्त ग्रेडिंग या बुखार की वजह से खराब निष्पादन हो सकता है। ये गुणारोपण सच हो सकता है। आप अपनी कार को दूसरे चालक के अचानक ब्रेक लगाने की वजह से वाहन में दुर्घटनाग्रस्त होने का श्रेय दे सकते हैं, हालांकि यह सामने वाले वाहन से दूरी बनाए रखने में आपकी स्वयं की अक्षमता के कारण भी हो सकता है। यह एक कारण हो सकता है कि हम सेल्फ–ड्राइविंग कारों को स्वीकार करने में संकोच क्यों करते हैं क्योंकि दुर्घटनाओं के मामले में, किसी को दोषी ठहराना अत्यधिक जटिल हो जाता है। आपके एक मशीन के मौखिक रोड रेज की लड़ाई नहीं कर सकते जैसा कि आप एक समान रूप से क्रोधित मानव चालक के साथ हो सकते हैं।

गुणारोपण की त्रुटियाँ

लोग अपने स्वयं के नकारात्मक व्यवहारों (या विफलताओं) को बाहरी कारकों और सकारात्मक व्यवहारों (या सफलताओं) को आंतरिक कारकों, यानी स्वयं–सेवा पूर्वाग्रह (*ब्रैडले,* 1978) पर गुणारोपित करते हैं, मुझे कार्यालय के लिए देर हो गई थी क्योंकि यातायात अप्रत्याशित रूप से बहुत धीमा था), दूसरी ओर, वे आंतरिक कारकों के लिए दूसरों के व्यवहारों का श्रेय आतंरिक कारकों को देते हैं, जिसे मौलिक आरोपण त्रुटि कहते हैं (*एफ ए ई; जोन्स* एवं *निस्बेट,* 1971, ''वह कार्यालय में देर से आया क्योंकि वह एक आलसी व्यक्ति है जो अपने केरियर को गंभीरता से नहीं लेता है'')। एक अन्य गुणारोपण की त्रुटि रक्षात्मक गुणारोपण है, जिसमें लोग पीड़ित को ही उसकी पीड़ा के लिए दोषी ठहराते हैं, उदाहरण के लिए, महिला के यौन उत्पीड़न के कारण को हमलावर के अलावा अन्य सभी चीजों के लिए, और और काले जातीयता के लोगों के खिलाफ घृणा अपराधों को प्रत्यक्षित आक्रामकता के ऊपर गुणारोपित किया जाता है। थॉर्नटन (1988) के अनुसार, यह त्रुटि व्यक्ति को ऐसे अपराधों का शिकार बनने के लिए कम संवेदनशील महसूस कराती है। इसे सिर्फ न्याय विश्व परिकल्पना द्वारा समझाया गया है। एक संज्ञानात्मक त्रुटि की दुनिया निष्पक्ष है और अच्छे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि केवल बुरे लोगों को दंडित किया जाता है क्यूंकि वे दुर्भाग्य के लायक हैं।

अंतर–सांस्कृतिक अध्ययनों से संकेत मिलता है कि सांस्कृतिक अंतर स्थितियों की व्यापक श्रेणी भर में गुणारोपण शैली के रूप में उभरते हैं। जबकि पश्चिमी शोधकर्ता इस बात की परिकल्पना करते हैं कि व्यक्ति अपनी सफलताओं को केवल आंतरिक कारकों पर गुणारोपित करते हैं। मोगध्दाम, डिट्टो एवं टेलर (1990) के एक अध्ययन में पाया गया कि कनाडा में रहने वाली भारतीय महिलाओं ने अपनी सफलताओं और विफलताओं दोनों को आंतरिक कारकों के उपर गुणारोपित किया। मॉरिस और पेंग (1994) ने हत्याओं के बारे में अमेरिकी और चीनी समाचार–पत्रों के लेखों की समीक्षा की और पाया कि अमेरिकी समाचार–पत्रों ने हत्या के कारण को आरोपी व्यक्ति की आंतरिक विशेषताओं के उपर, जबकि चीनी समाचार–पत्रों ने इसे स्थितिजन्य कारकों (जैसे समुदाय से अलग–थलग महसूस करना) पर गुणारोपित किया।

4.5.4 आक्रामकता

आक्रामकता व्यवहार के माध्यम से क्रोध की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है, जिसमें अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचता है। आनुवंशिक कारकों के अलावा, पर्यावरण और सांस्कृतिक कारकों का किसी संस्कृति में समग्र प्रत्यक्षं, अनुभव और आक्रामकता की अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। फिनलैंड में, आक्रामकता को कुछ इस तरह देखा जाता है कि कोई व्यक्ति आनंद प्राप्त करने के लिए कुछ करता है, इसलिए, एस्टोनिया की तुलना में इसे अधिक भयावह माना जाता है, जहाँ एक लक्ष्य हासिल करने के लिए आक्रामकता को अधिक सामान्य साधन माना जाता है (*तेरव* एवं *केल्टिकांगस*, 1998)। इसके अलावा, हांगकांग (संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में) में आक्रामकता अधिक सामाजिक रूप से स्वीकार्य और सामान्य है, जब दो लोगों के अधिकार स्तरों में अंतर होता है (*बॉन्ड, वान, लेओंग*, एवं *जियाकोलोन*, 1985)।

आक्रामकता पर इस प्रभाव को निर्धारित करने में कई कारक शामिल हैं; उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं (*बॉन्ड*, 2004):

1) सामूहिकतावादी बनाम व्यक्तिवादी समाज–संस्कृति में व्यक्तिवाद का आर्थिक कारकों के आने से पहले हिंसा में कमी पर प्रबल प्रारंभिक प्रभाव होता है (*कारस्टेड*, 2001)। इसके अलावा, व्यक्तिवादी समाज आर्थिक रूप से बेहतर करते हैं, जिससे आक्रामकता और हिंसा के पैटर्न को और कम किया जा सकता है। सामूहिक संस्कृतियों में अन्तःसमूह के प्रति वफादार और प्रतिबद्ध होने के सामाजिक दबाव के कारण, वाह्य–समूह के प्रति हिंसा और आक्रामकता की संभावना अधिक हो जाती है (*गिदेंस*, 1976; *इंगलर्ट*, 1997)। इसके अलावा, सामूहिक समाजों में महिलाओं के खिलाफ आक्रामकता अधिक है क्योंकि वे अपमानजनक रिश्ते में रहने के लिए अधिक दबाव महसूस करते हैं (*वांडेलो* एवं *कोहेन*, 2002)।

2) आर्थिक स्थिति– धनवान समाजों में मानव हत्या की दर कम होती है (*लिम* एवं अन्य, 2005)। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी देश के धन की तुलना में आर्थिक असमानता, मानव हत्या के दर का बेहतर पूर्वानुमान करती है (*कैनेडी, कावाची*, एवं *प्रोथ्रो–स्टिथ*, 1996)। इसलिए, समाज में आक्रामकता और हिंसा को नियंत्रित करने के लिए धन और संसाधनों का समान वितरण महत्वपूर्ण है।

3) युद्ध और अन्य हिंसक राजनीतिक झगड़ों में शामिल होना एक समाज के भीतर तनाव और आक्रामकता का वातावरण बनाता है। वे देश जो द्वितीय विश्व युद्ध में

शामिल थे (युद्धक देश), उन देशों की तुलना में जो युद्ध में शामिल नहीं थे, युद्ध समाप्त होने के बाद उनमे उच्चतर आत्महत्या की दर थी, (*आर्चर* एवं *गार्टनर*, 1984)। इसलिए, अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में शामिल होने से देश के आंतरिक कामकाज पर गहरा, नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4) लोकतांत्रिक बनाम निरंकुश समाज–स्थिर लोकतंत्र वाले देश, युद्ध में भाग लेने के लिए कम उत्सुक होते हैं (*रममेल*, 1988)। उनके स्वतंत्रता और मानवाधिकारों का सम्मान करने की अधिक संभावना है। यह संस्कृति के भीतर मानव हत्या और आक्रामकता के कारण को प्रतिबंधित करता है।

4.5.5 व्यक्ति–प्रत्यक्षण, आकर्षण और संबंध

व्यक्ति दूसरों के बारे में लगातार दूसरों का मूल्यांकन करता रहता है, जो नई जानकारी और कई अन्य कारकों के अनुसार आकार और संशोधित होता रहता हैं। हम लोगों और उनके व्यवहार का कैसे प्रत्यक्षण करते हैं (व्यक्ति की धारणा), यह प्रत्यक्षित व्यक्ति की आंतरिक अवस्था के बारे में हमारी अपनी धारणाओं द्वारा आकार लेता है। यद्यपि स्मृति के संदर्भ में, व्यक्ति प्रत्यक्षण में प्राथमिक प्रभाव का उपयोग व्यक्ति का समग्र प्रत्यक्षण करने में दुसरों की प्रथम छवि को अतिआकलन करने की व्यक्तियों की प्रविति (दूसरों से कई बार मिलने के बावजूद) की व्याख्या करने में उपयोग किया जाता है (एंडरसन, 1971)। नोगुची, कामदा, एवं श्रीरा (2013) ने पाया कि अमेरिकी सहभागियों ने जापानी सहभागियों की तुलना में अधिक प्राथमिकता प्रभाव दिखाया। बाद वाले लोगों के व्यवहार की जानकारी के बारे में सूचना देने के लिए अधिक उत्तरदायी थे।

मुखीय पहचान अध्ययनों से संकेत मिलता है कि व्यक्ति दूसरों की तुलना में स्वयं के जातीय लोगों के चेहरे को अधिक सटीक रूप से पहचान सकते हैं (उदाहरण के लिए, एनजी एवं लिंडसे, 1994; बोथबेल, ब्रिघम एवं मालपास, 1989)। इसका एक स्पष्टीकरण अंतरसमूह संपर्क (या इसकी कमी) हो सकता है, व्यक्ति दूसरों की तुलना में अपनी जाति के लोगों के आस–पास अधिक समय बिताते हैं, इसलिए इस नस्ल के चेहरे की विशिष्ट विशिष्ट गुणों का पहचान करना बेहतर होता है।

पारस्परिक आकर्षण, प्रेम और रिश्तों अंतःसांस्कृतिक अनुसंधान में अध्ययन के अन्य दिलचस्प क्षेत्र रहें हैं। क्राउचर, ऑस्टिन, फेंग, एवं होलोदी (2011) ने भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के अंतरवैयक्तिक आकर्षण का पता लगाया और पाया कि दोनों समूहों ने दूसरे की तुलना में अपने धार्मिक समूह के लोगो के प्रति अधिक आकर्षण (शारीरिक, सामाजिक और कार्य क्षेत्रों में) प्रदर्शित किया।

टिंग–टुमी (1991) द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और फ्रांस के मध्य प्यार के बारे में अभिवृत्ति की तुलना की गई। यह पाया गया कि जापानी सहभागियों की तुलना में अमेरिकी और फ्रांसीसी सहभागियों द्वारा प्रेम की प्रतिबद्धता और प्रकटन रखरखाव को बहुत अधिक रेटिंग दिया गया था और अमेरिकियों ने जापानी की तुलना में संबंधपरक द्वैधता की रेटिंग ज्यादा किया। फ्रांसीसी विषयों पर जापानी और अमेरिकी प्रतिभागियों द्वारा अंतर्द्वंद्व अभिव्यक्ति के क्षेत्र को उच्च दर्जा दिया गया था।

यद्यपि, लोग अपने अंतरसमूहों के प्रति आकर्षित होते हैं, हाल में किए गए अधिकांश काम भिन्न संस्कृति के सदस्यों के साथ घनिष्ठ संबंधों को विकसित करने के लाभों

को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए, लू और उनके सहयोगियों (2017) ने रचनात्मकता पर पारस्परिक संबंधों के प्रभाव पर अध्ययन की एक श्रृंखला आयोजित की। गैर-अमेरिकी जिन्होंने जे.1 वीजा के तहत अमेरिका में काम किया था, जो अपने अमेरिकी दोस्तों के साथ संपर्क में रहते थे, वे अधिक अभिनवशील थे और उनके उद्यमी बनने की संभावना अधिक थी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतरसांस्कृतिक डेटिंग का अनुभव करने वाले लोगों में विशिष्ट अन्तरासांस्कृतिक डेटिंग अनुभव वाले लोगों की तुलना में रचनात्मकता का उच्च स्तर था। इस प्रकार, दीर्घकालिक अंतरसांस्कृतिक मित्रता और अंतरसांस्कृतिक रोमांटिक सम्बन्ध का इतिहास लोगों पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डालता है।

स्व-मूल्यांकन प्रश्न III

बताएँ कि क्या निम्न वाक्य 'सत्य' हैं या 'असत्य':

1) आक्रामकता व्यवहार के माध्यम से क्रोध की एक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है, जिसमें किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचाया जाता है। ( )

2) आत्म-सेवी पूर्वाग्रह एक गुणारोपण त्रुटि है जिसमें लोग पीड़ितों को उनकी पीड़ा के लिए दोषी मानते हैं। ( )

3) सामाजिक अस्मिता सिद्धांत (*ताजफेल,* 1978) इस धारणा पर आधारित है कि सामाजिक समूहों के संबंध में पहचान बनाने से व्यक्ति की स्वयं की पहचान भी मजबूत और संरक्षित होती है। ( )

4) अनुरूपता से तात्पर्य एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह सदस्यों के एक साथ काम करने की क्षमता से है। ( )

5) हम जिन समूहों से खुद को जोड़ते हैं या महसूस करते हैं उसे 'वाह्य समूह' कहते हैं। ( )

4.6 सारांश

संस्कृति इस बात का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है कि हमारे जीवन के दौरान हमारे प्रत्यक्षण, दृष्टिकोण और व्यवहार कैसे आकार लेते हैं और परिवर्तित होते हैं। कुछ एजेंट जो हमारे एनकल्चरेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे हैं तत्काल परिवार, विस्तारित परिवार, दोस्त, शिक्षा और धर्म। अलग-अलग संस्कृतियों में उनकी भूमिकाएँ अलग-अलग होती हैं, जो व्यक्ति के भाव के कन्स्ट्रुअल को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती है, और सामूहिकवादी संस्कृतियों में, जो समूह के सामंजस्य और उसके भीतर उपयुक्त होने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। संस्कृति के प्रकार के अनुसार एक को ऊपर लाया जाता है, वे आमतौर पर ज्यादा मूल्यवान और सामाजिक रूप से उचित होती हैं। किसी के पास कई सांस्कृतिक पहचान हो सकती हैं, जहाँ स्थिति के अनुसार कोई भी दूसरों के प्रति शांत हो जाता है। हालांकि, अन्तःसमूह पहचान का नुकसान अन्तःसमूह पक्षपात हो सकता है, जो हमें इंटरग्रुप कॉन्टैक्ट के जरिए हमारे जगत के प्रति दृष्टिकोण का विस्तार करने से रोक सकता है और पूर्वाग्रहों और भेदभावपूर्ण व्यवहारों को भी प्रभावित कर सकता है। सांस्कृतिक मतभेदों को देखते हुए, कई समानताओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, सांस्कृतिक अंतर

पदानुक्रमित नहीं होते, अर्थात, वे अनिवार्य रूप से एक संस्कृति को दूसरे पर बेहतर नहीं बना सकते हैं।

4.7 इकाई के अंत में पूछे जाने वाले प्रश्न

1) संस्कृतीकरण की प्रकृति और अर्थ को स्पष्ट करें और इसका परसंस्कृतिग्रहण से अंतर स्पष्ट करें।

2) किसी व्यक्ति को समाज के लिए एनकल्चरेट के लिए जिम्मेदार प्रमुख एजेंटों को समझाएँ।

3) उदाहरण के साथ, विभिन्न संस्कृतियों में तात्कालिक और विस्तारित परिवार के साथ-साथ साथी संबंधों की भूमिका का एनकल्चरेशन में उल्लेख कीजिए ।

4) शिक्षा और धर्म के क्या कार्य हैं? वे व्यक्तियों के समाजीकरण को कैसे प्रभावित करते हैं।

5) व्यक्ति और सामूहिक संस्कृति में स्वयं की भावना कैसे बदलती है? व्यक्तिवादी और स्वयं के सामूहिक दृष्टिकोण के लिए भावनात्मक, संज्ञानात्मक और प्रेरक परिणामों का भी वर्णन करें।

6) बहुसांस्कृतिक अस्मिता से आप क्या समझते हैं? अंतर-वैयक्तिक, अंतरा-वैयक्तिक, और सामूहिक स्तरों पर इसकी गतिशीलता की व्याख्या करें।

7) समूह सदस्यता की गतिशीलता में अंतर-सांस्कृतिक अंतर का वर्णन करें।

8) गुणारोपण, आक्रामकता, व्यक्ति प्रत्यक्षण और करीबी रिश्तों के संदर्भ में सांस्कृतिक अंतर को स्पष्ट करें।

4.8 शब्दावली

परसंस्कृतिग्रहण : उस व्यक्ति से भिन्न संस्कृति को अपनाना, जिसमें वह व्यक्ति मूल रूप से जुड़ा हुआ था।

आक्रामकता : व्यवहार के माध्यम से क्रोध की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति को शारीरिक या मनोवैज्ञानिक नुकसान पहुंचाता है।

गुणारोपण : किसी विशेष घटना या व्यवहार का कारण/स्पष्टीकरण जिसे किसी अन्य व्यक्ति या स्थितिजन्य कारकों द्वारा नियंत्रित किए जाने के लिए मूल्यांकन निर्णय।

सह-नींद : जब छोटे बच्चे और उनके माता-पिता एक ही कमरे में सोते हैं।

सामूहिकता : राजनीतिक या सांस्कृतिक विचारधारा जो समूह के साथ अन्योन्याश्रित स्व और फिटिंग पर केंद्रित है।

अनुपालन : स्पष्ट रूप से (सार्वजनिक रूप से व्यक्त व्यवहार में) सामाजिक दबाव का पालन करना, हालांकि निजी विश्वास अपरिवर्तित रह सकते हैं।

अनुरूपता : वास्तविक या कथित सामाजिक दबाव का पालन करना।

सहयोग : एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह के सदस्यों की एक साथ काम करने की क्षमता।

संस्कृति : मानव जनसंख्या द्वारा बनाए गए समतुल्य और पूरक सीखे गए अर्थों की समग्रता, या आबादी के पहचाने जाने योग्य क्षेत्रों द्वारा, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित की जाती है ।

रक्षात्मक गुणारोपण : पीड़ितों को उनकी पीड़ा के लिए दोषी ठहराने की प्रवृत्ति।

संस्कृतिकरण : संस्कृति की विभिन्न एजेंसियों द्वारा हमारी अपनी संस्कृति के पहलुओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाना।

फासीवाद : एक लोकतंत्र विरोधी राजनीतिक विचारधारा जो चरम राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करती है, वाह्य-समूह के व्यक्तियों को मौलिक अधिकारों से वंचित करती है या उन्हें विचलनकारी माना जाता है।

मूलभूत गुणारोपण त्रुटि : दूसरों के व्यवहार को आंतरिक कारकों के पर गुणारोपण करने की प्रवृत्ति।

समूह आशक्ति चिंता : अंतः समूह में स्वीकार नहीं किए जाने की असुरक्षा।

समूह आशक्ति से परिहार : अंतः समूह पर निर्भर रहने से बचना ।

विषम जातीय मित्रता : स्वयं से भिन्न जातीय समूहों से संबंधित समकक्षियों के साथ दोस्ती।

सम जातीय मित्रता : खुद की जातीयता के समकक्षियों के साथ दोस्ती।

पहचान पुनर्परिभाषा : लक्षित अस्मिता के सकारात्मक गुणों को भुनाना ताकि सकारात्मक संघों का निर्माण हो और उक्त पहचान के बारे में बेहतर महसूस हो।

अस्मिता बदलाव : कम असुरक्षित या अधिक सकारात्मक रूप से देखी जाने वाली पहचान की तरफ बदलाव।

व्यक्तिवाद : राजनीतिक या सांस्कृतिक विचारधारा जो स्वतंत्र स्व पर बल एवं समूह से अलग दिखती है।

अन्तःसमूह : वह समूह जिसके साथ हम खुद को जोड़ते हैं एवं उससे जुड़ाव महसूस करते हैं।

अन्तः समूह पक्षपात/अंतर–समूह पक्षपात/इन–ग्रुप फेबरिटिज्म : अन्तः समूह का पक्ष लेने तथा वाह्य-समूह का विरोध करने की प्रवृत्ति।

इन-ग्रुप पहचान : अपने अन्तः समूह में जुड़ाव की भावना।

इन-ग्रुप इन्वेस्टमेंट : व्यक्तिगत लाभ से परे जाकर समूह के लाभ के लिए व्यवहार करना।

अंतर-सांस्कृतिक नीतियाँः ऐसी नीतियाँ जो अंतर-सांस्कृतिक अनावरण से प्रभावित अपनी संस्कृतिक अस्मिता के रूप में अंतर-सांस्कृतिक संपर्क और नम्यता को प्रोत्साहित करती हैं।

न्यायसंगत विश्व परिकल्पनाः एक संज्ञानात्मक भ्रान्ति कि दुनिया निष्पक्ष है और अच्छे लोगों को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि केवल बुरे लोगों को ही दंडित किया जाता है।

बहुसांस्कृतिक पहचान : एक या एक से अधिक पहचान या संस्कृति से संबंधित या पहचान।

बहुसंस्कृतिवादी नीतियाँ : ऐसी नीतियाँ जो परंपराओं और समुदायों से संबंधित अपने मूल सार में कई संस्कृतियों के संरक्षण पर जोर देती हैं ।

आज्ञाकारिता : किसी प्राधिकारी से कुछ प्रत्यक्ष निर्देशों या आदेशों का पालन करन की प्रवृत्ति।

वाह्य-ग्रुप : समूह जिससे हम खुद को नहीं जोड़ पाते अथवा जिसके साथ जुड़ाव नहीं महसूस होता।

व्यक्ति प्रत्यक्षण : दूसरे के बारे में छवि बनाना तथा लोगों और उनके व्यवहारों के बारे में मानसिक अभ्यावेदन के साथ अंतर्क्रिया करना।

प्राथमिकता प्रभाव : किसी व्यक्ति के बारे में समग्र प्रत्यक्षण करते समय प्रथम छवि को अत्यधिक महत्व देने की प्रवृत्ति।

पुनर्वर्गीकरण : छोटे अन्तःसमूहों को एक बड़े समूह में विलय करके पुनर्परिभाषित करना।

आत्म-सेवी पूर्वाग्रह : स्वयं के व्यवहार को वाह्य कारकों पर गुणारोपित करने की प्रवृत्ति।

4.9 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

1) व्यक्तियों का समूह
2) अपनाता है और कई मामलों में एक अलग संस्कृति को अपनाता है
3) इन्कलचरेशन
4) संस्कृति
5) माता-पिता

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

1) समूहवादी
2) सामाजिक स्पष्टीकरण
3) व्यक्तिगत संस्कृतियाँ
4) अंतरसंस्कृतिवाद
5) समूहवादी

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 3

1) सत्य
2) असत्य
3) सत्य
4) असत्य
5) असत्य

4.10 सुझाए गए पठन एवं सन्दर्भ

Branscombe, N. R., & Baron, R. A. (2016). *Social psychology (14th ed.)*, Boston: Pearson/Allyn & Bacon.

Matsumoto, D. R., &Juang, L. P. (2008). *Culture and psychology*. Belmont, CA: Wadsworth/Thomson.

Myers, D. G. & Twenge, J. M. (2017). *Social psychology (12th ed.)*, New York, NY : McGraw-Hill.

References

Aaker, J. L., & Williams, P. (1998). Empathy Versus Pride: the Influence of Emotional Appeals Across Cultures. *Journal of Consumer Research, 25*(3), 241-261. doi:10.1086/209537

Ainsworth, M., Blehar, M., Waters, E., & Wall, S. (1978). *Patterns of attachment: A psychological study of the strange situation.* Hillsdale, NJ: Erlbaum.

Akhtar, S. (2009). Friendship, socialization, and the immigrant experience. *Psychoanalysis, Culture & Society,14*(3), 253-272. doi:10.1057/pcs.2009.14

Al-Hassani, S. T. S. (2011). 1001 inventions: Muslim heritage in our world. *Foundation for Science, Technology and Civilisation Ltd.*

Archer, D., & Gartner, R. (1984). *Violence and crime in cross-national perspective.* New Haven, CT: Yale University Press.

Anderson, N. H. (1971). *Integration theory and attitude change. Psychological Review, 78*, 171–206.

Baumrind, D. (1967). Child care practices anteceding three patterns of pre-school behavior. *Genetic Psychology Monographs, 75*, 43-88.

Baumrind, D. (1971). Current patterns of parental authority. *Developmental Psychology Monograph, 4* (No. 1, Pt. 2).

Berry, J. W., Poortinga, Y. H., Segall, M. H., &Dasen, P. R.(1992). *Cross-cultural psychology: Research and applications.* New York: Cambridge University Press.

Bernstein, M. J. (2015). *Ingroups and Outgroups*. The Wiley Blackwell Encyclopedia of Race, Ethnicity, and Nationalism, 1–3. doi: 10.1002/9781118663202.wberen482

Black, S. (2002). When students push past peer influence. *The Education Digest*, *68*, 31-36.

Bond, M. H., Wan, K. C., Leong, K., &Giacalone, R. A.(1985). How are responses to verbal insult related tocultural collectivism and power distance? *Journal ofCross-Cultural Psychology, 16*(1), 111-127.

Bond, M. H. (2004). Culture and Aggression— From Context to Coercion. *Personality and Social Psychology Review, 8*(1), 62–78. doi:10.1207/s1532 7957 pspr0801_3

Borup, J., &Ahlin, L. (2011). Religion and Cultural Integration. *Nordic Journal of Migration Research,1*(3). doi:10.2478/v10202-011-0015-z

Bothwell, R. K., Brigham, J. C., &Malpass, R. S. (1989).Cross-racial identification. *Personality and Social PsychologyBulletin, 15*(1), 19-25.

Bradley, G. W. (1978). Self-serving biases in the attributionprocess: A re-examination of the fact or fiction question.*Journal of Personality and Social Psychology, 35,*56-71.

Braun, A. (2017, June 26). The Once-Common Practice of Communal Sleeping. Retrieved from https://www.atlasobscura.com/articles/communal-sleeping-history-sharing-bed

Brown, R. J., & Wade, G. (1987). Superordinate goals and intergroup behaviour-the effect of role ambiguity and status on intergroup attitudes and task-performance. *European Journal of Social Psychology, 17,* 131-142.

Cadge, W., & Howard Ecklund, E. (2007). Immigration and Religion. *Annual Review of Sociology, 33(1),* 359-379.doi:10.1146/annurev.soc.33.040406. 131707.

Castrogiovanni, D. (2002). Adolescence: Peer groups. Retrieved January 24, 2004, from: http://inside.bard.edu/academic/specialproj/_darling/adolesce.htm

Chao, R. K. (1994). Beyond parental control and authoritarianparenting style: Understanding Chinese parentingthrough the cultural notion of training. *Child Development,65*, 1111-1119.

Compayré, G., & Payne, W. H. (1899). *The history of pedagogy*, Boston: D.C. Heath & Co.

Conroy, M., Hess, D. R., Azuma, H., & Kashiwagi, K.(1980). Maternal strategies for regulating children's behavior.*Journal of Cross-Cultural Psychology, 11*(2), 153-172.

Croucher, S. M., Austin, M., Fang, L., &Holody, K. J. (2011). Interpersonal attraction and religious identification: a comparative analysis of Muslims and Hindus in India. *Asian Journal of Communication, 21*(6), 564-574. doi:10.1080/01292986.2011.609600

Desai, S. (1995). When Are Children from Large Families Disadvantaged? Evidence from Cross-National Analyses. *Population Studies, 49(2),* 195-210.doi:10.1080/0032472031000148466

DeMarco, T. C., & Newheiser, A.-K. (2018). Attachment to groups: Relationships with group esteem, self-esteem, and investment in ingroups. *European Journal of Social Psychology,* doi:10.1002/ejsp.2500

Dewey, J. (1899). *The school and society: Being three lectures*, Chicago: The University of Chicago Press.

Dewey, J. (1916). *Democracy and education: An introduction to the philosophy of education*, New York: Macmillan.

Dhawan, N., Roseman, I. J., Naidu, R. K., Komilla, T., &Rettek, S. I. (1995). Self-concepts across two cultures.*Journal of Cross-Cultural Psychology, 26*(6), 606-621.

Doi, T. (1973). *The anatomy of dependence,* Tokyo:Kodansha.

Dosanjh, J. S., &Ghuman, P. A. S. (1996). The cultural contextof child rearing: A study of indigenous and BritishPunjabis. *Early Child Development and Care, 126*, 39-55.

Ernst, C, & Angst, J. (1983). *Birth order*, New York: Springer-Verlag

Foner, N. and Alba, R. (2008), Immigrant Religion in the U.S. and Western Europe: Bridge or Barrier to Inclusion? *International Migration Review, 42*: 360-392. doi:10.1111/j.1747-7379.2008.00128.x

Gaertner, S. L., Mann, J. A., Dovidio, J. F., Murrell, A. J., &Pomare, M. (1990). How does cooperation reduce intergroup bias? *Journal of Personality and Social Psychology, 59*, 692-704.

Ghosh, R. (1983). Sarees and the maple leaf: Indian women in Canada. In Kurian, G., and Srivastava, R. P. (1983). *Overseas Indians: A study in adaptation* (pp. 90-99), New Delhi: Vikas.

Gupta, A. (2007). *Going to School in South Asia,* Westport, CT: Greenwood Publishing Group.

Gutiérrez, A. S., &Unzueta, M. M. (2010). The effect of interethnic ideologies on the likability of stereotypic vs. counterstereotypic minority targets. *Journal of Experimental Social Psychology, 46*(5), 775-784.http://dx.doi.org/10.1016/j.jesp.2010.03.010

Heider. F (1958). *The psychology of interpersonal relations*. New York: Wiley. ISBN 9780898592825.

Isaac, R., Annie, I. K., & Prashanth, H. R. (n.d.). Parenting in India. In H. Selin (Ed.), *Parenting Across Cultures* (Vol. 7, pp. 39-45), Springer Netherlands. doi:10.1007/978-94-007-7503-9.

Garcia Coll, C. T., Sepkoski, C., & Lester, B. M. (1981). Culturaland biomedical correlates of neonatal behavior.*Developmental Psychobiology, 14,* 147-154.

Geary, D. C. (1996). International differences in mathematicalachievement: Their nature, causes, and consequences.*Current Directions in Psychological Science,5*(5), 133-137.

Giddens, A. (1976). Classical sociological theory and the origins of modern sociology. *American Journal of Sociology, 81*,703-729.

Gudykunst, W. B., Yoon, Y., & Nishida, T. (1987). The influence of individualism-collectivism on perceptions of communication in ingroup and outgroup relationships. *Communication Monographs, 54*(3), 295-306. doi:10.1080/03637758709390234.

Hanish L.D. &Fabes R.A. (2014) Peer socialization of gender in young boys and girls. In: Tremblay R.E., Boivin M., & Peters R.DeV. (Eds). Martin C.L., (Section Ed). *Encyclopedia on Early Childhood Development*. http://www.child-encyclopedia.com/gender-early-socialization/according-experts/peer-socialization-gender-young-boys-and-girls.

Hickey, M. G. (2006). Asian Indian family socialization patterns and implications for American schooling. In C. C. Park, A. L. Goodwin, & S. J. Lee (Eds.), *Asian and Pacific American education: Learning, socialization, and identity* (pp. 193–219). Charlotte, NC: Information Age.

Hirsh, J. B., & Kang, S. K. (2016). Mechanisms of Identity Conflict: Uncertainty, Anxiety, and the Behavioral Inhibition System. *Personality and Social Psychology Review*, *20*(3), 223–244. https://doi.org/10.1177/1088868315589475

Hofstede, G. (2001). *Culture's consequences: Comparing values, behaviors, institutions, and organizations across nations (2nd ed.)*. Thousand Oaks, CA: Sage.

Hong, Y., Zhan, S., Morris, M. W., & Benet-Martínez, V. (2016). Multicultural identity processes. *Current Opinion in Psychology, 8*, 49–53. doi:10.1016/j.copsyc.2015.09.020

Hoorn, A. V. (2014). Individualist–Collectivist Culture and Trust Radius. *Journal of Cross-Cultural Psychology, 46*(2), 269-276. doi:10.1177/0022022114551053

Hornsey, M. J., & Hogg, M. A. (2000). Subgroup relations: A comparison of mutual intergroup differentiation and common ingroup identity models of prejudice reduction. *Personality and Social Psychology Bulletin, 26*, 242-256.

Howard, N. M. (2004). Peer Influence in Relation to Academic Performance and Socialization among Adolescents: A Literature Review. 6.

Inglehart, R. (1997).*Modernization and post-modernization: Cultural, economic and political change in 43 societies*. Princeton, NJ: Princeton University Press.

Islam, G. (2014). Social Identity Theory. In T. Teo (Ed.), *Critical Psychology and Business Ethics* (pp. 1781-1783). New York, NY: Springer-Verlag. https://doi.org/10.1007/978-1-4614-5583-7_289

Jahoda, G. (1984). Do we need a concept of culture? *Journalof Cross-Cultural Psychology, 15*(2), 139-151.

Jamatia, F., & Gundimeda, N. (2019). Ethnic identity and curriculum construction: Critical reflection on school curriculum in Tripura. *Asian Ethnicity,*1-18. doi:10.1080/14631369.2019.1568861

Jha, S. D., & Singh, K. (2011). An analysis of individualism-collectivism across Northern India. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, 37*(1), 149-156.

Jones, E. E., & Nisbett, R. E. (1971). The actor and the observer:Divergent perceptions of the causes of behavior.In E. E. Jones, D. E. Kanouse, H. H. Kelley, R. E. Nisbett, S. Valins, & B. Weiner (Eds.), *Attribution: Perceivingthe causes of behavior*(pp. 79-94) Morristown,NJ: General Learning Press.

Joshi, S. M., & MacLean, M. (1997). Maternal expectationsof child development in India, Japan, and England. *Journalof Cross-Cultural Psychology, 28*(2), 219-234.

Kamal, Z., & Lowenthal, K. M. (2002). Suicide beliefs andbehavior among young Muslims and Indians in the UK.*Mental Health, Religion and Culture, 5*(2), 111–118.

Karstedt, S. (2001). Die moralischestaerkeschwacherbindungen. Individual ismus und gewaltimkulturvergleich [The moralstrength of weak ties: A cross-cultural analysis of individualismandviolence]. *Monatsschriftfuer Kriminologie und Strafrechtsreform, 84*, 226–243.

Karve, I. (1965). *Kinship organisation in India* (2nd ed.). Bombay: Asia Publishing House.

Kennedy, B. P., Kawachi, I., & Prothrow-Stith, D. (1996). Income distribution and mortality: Cross-sectional ecological study of the Robin Hood index in the United States. British Medical Journal, 312,1004–1007

Kim, U. (1992). *The parent-child relationship: The core of Koreancollectivism*. Unpublished manuscript, Departmentof Psychology, University of Hawaii, Honolulu.

Kitayama, S., Markus, H. R., Kurokawa, M., &Negishi, K.(1993). *Social orientation of emotions: Cross-cultural evidenceand implications,* Unpublished manuscript, Universityof Oregon.

LeVine, R. A. (1977). Child rearing as cultural adaptation. InP. H. Leiderman, S. R. Tulkin, & A. Rosenfeld (Eds.),*Culture and infancy* (pp. 15–27), New York: Academic Press.

LeVine, R. A., LeVine, S. E., Dixon, S., Richman, A.,Leiderman, P. H., & Keefer, C. (1996). *Child care andculture: Lessons from Africa*. Cambridge, UK: CambridgeUniversity Press.

Lim, F., Bond, M. H., & Bond, M. K. (2005). Linking Societal and Psychological Factors to Homicide Rates Across Nations. *Journal of Cross-Cultural Psychology, 36*(5), 515–536. https://doi.org/10.1177/0022022105278540

Lu, J. G., Hafenbrack, A. C., Eastwick, P. W., Wang, D. J., Maddux, W. W., & Galinsky, A. D. (2017). "Going out" of the box: Close intercultural friendships and romantic relationships spark creativity, workplace innovation, and entrepreneurship. *Journal of Applied Psychology, 102*(7), 1091-1108. doi:10.1037/apl0000212

Maccoby, E. E., & Martin, J. A. (1983). Socialization in thecontext of the family: Parent-child interaction. In E. M.Hetherington (Ed.), *Handbook of child psychology: Vol. 4.Socialization, personality, and social development* (4thed., pp. 1–101). New York: Wiley.

Markus, H. R., & Kitayama, S. (1991b). Culture and the self : Implications for cognition, emotion, and motivation.*Psychological Review, 98,* 224-253.

Maslow, A. H. (1968). *Toward a psychology of being*. New York: Van Nostrand.

Mathur, M. (2009). Socialisation of Street Children in India: A Socio-economic Profile. *Psychology and Developing Societies*, *21*(2), 299-325. https://doi.org/10.1177/097133360902100207

McEvoy, M., Lee, C., O'Neill, A., Groisman, A., Roberts-Butelman, K., Dinghra, K., &Porder, K. (2005). Are there universal parenting concepts among culturally diverse families in an inner-city pediatric clinic? *Journal of Pediatric Health Care, 19*(3), 142–150.doi:10.1016/j.pedhc.2004.10.007

Miller, J. G. (1984). Culture and the development of everydaysocial explanation. *Journal of Personality and Social Psychology, 46,* 961-978.

Mistry, J., Contreras, M. M., & Pufall-Jones, E. (2014). Childhood socialization and academic performance of bicultural youth. In V. Benet-Martínez & Y.-Y. Hong (Eds.), *Oxford library of psychology. The Oxford*

handbook of multicultural identity (pp. 355-378), New York, NY, US: Oxford University Press.

Miura, I. T., Okamoto, Y., Kim, C. C., Steere, M., et al.(1993). First graders' cognitive representation of numberand understanding of place value. Cross-national comparisons: France, Japan, Korea, Sweden, and the United States. *Journal of Educational Psychology, 85*(1),24–30.

Moghaddam, F. M., Ditto, B., & Taylor, D. M. (1990). Attitudes and attributions related to psychological symptomatology in Indian immigrant women. *Journal of Cross-Cultural Psychology, 21,* 335–350.

Morris, M. W., & Peng, K. (1994). Culture and cause: American and Chinese attributions for social and physical events. *Journal of Personality and Social Psychology,67*(6), 949-971.

Morris, M. W., Chiu, C., & Liu, Z. (2015). Polycultural Psychology. *Annual Review of Psychology, 66*(1), 631-659. https://doi.org/10.1146/annurev-psych-010814-015001

Ng, W. G., & Lindsay, R. L. (1994). Cross-race facial recognition:Failure of the contact hypothesis. *Journal of Cross-Cultural Psychology, 25*(2), 217-232.

Noguchi, K., Kamada, A., & Shrira, I. (2013). Cultural differences in the primacy effect for person perception. *International Journal of Psychology*, n/a–n/a. doi:10.1002/ijop.12019

Ogarkova, A., Soriano, C., & Gladkova, A. N. (2016). Methodological triangulation in the study of emotion the case of 'anger' in three language groups. *Review of Cognitive Linguistics, 14*(1), 73-101. https://doi.org/10.1075/rcl.14.1.04oga

Okonkwo, R. (1997). Moral development and culture in Kohlberg's theory: A Nigerian (Igbo) evidence. *IFTPsychologia: An International Journal, 5*(2), 117-128.

Outlook Web Bureau. (2018, April 27). People Behave Themselves Abroad, But Once In India They Spit On, Litter Public Places: New SDMC Mayor. Outlook. Retrieved from https://www.outlookindia.com/website/story/people-behave-themselves-abroad-but-once-in-india-they-spit-on-litter-public-pla/311408

Papps, F., Walker, M., Trimboli, A., & Trimboli, C. (1995).Parental discipline in Anglo, Greek, Lebanese, and Vietnamese cultures. *Journal of Cross-Cultural Psychology,26*(1), 49-64.

Pelto, P. J. (1968, April). The differences between "tight"and "loose" societies. *Trans-action,* pp. 37-40.

Peters, M. A. (2018). The return of fascism: Youth, violence and nationalism. *Educational Philosophy and Theory*, 1–5. doi:10.1080/00131857.2018.1519772

Phalet, K., & Claeys, W. (1993). A comparative study ofTurkish and Belgian youth. *Journal of Cross-Cultural Psychology, 24*, 319-343.

Reitz, J. G. Breton, R., Dion, K.K., & Dion, K.L. (2009). *Multiculturalism and Social Cohesion: Potentials and Challenges of Diversity*. London: Springer.

Rohner, R. P. (1984). Toward a conception of culture for cross-cultural psychology. *Journal of Cross-Cultural Psychology,15,* 111-138.

Rohner, R. P., & Pettengill, S. M. (1985). Perceived parental acceptance-rejection and parental control among Korean adolescents. *Child Development, 56*, 524-528.

Rom, E., & Mikulincer, M. (2003). Attachment theory and group processes: The association between attachment style and group-related representations, goals, memories, and functioning. *Journal of Personality and Social Psychology, 84*(6), 1220-1235. doi:10.1037/0022-3514.84.6.1220

Rosin, H., & Spiegel, A. (2017, June 15). The Culture Inside [Audio Podcast]. Retrieved from https://www.npr.org/programs/invisibilia/532950995/the-culture-inside

Rummel, R. J. (1988, June).Political systems, violence, and war. Paper presented at the United States Institute of Peace Conference, Airlie House, Airlie, VA.

Sagie, A., Elizur, D., & Yamauchi, H. (1996). The structure and strength of achievement motivation: A cross-cultural comparison. Journal of Organizational Behavior, 17(5), 431–444. doi:10.1002/(sici)1099-1379(199609)17:5<431::aid-job771>3.0.co;2-x

Salem, R. (2006). *Sibling configuration: Impact on education and health outcomes of adolescents in Egypt*. Maadi, Egypt: Gender, Family and Development Program, Population Council, Regional Office for West Asia and North Africa.

Sanchez, D. T. (2010). How do forced-choice dilemmas affect multiracial people? The role of identity autonomy and public regard in depressive symptoms. *Journal of Applied Social Psychology, 40*(7), 1657-1677. http://dx.doi.org/10.1111/j.1559-1816.2010.00634.x

Sanchez, D. T., Shih, M. J., & Wilton, L. S. (2014). Exploring the identity autonomy perspective (IAP): An integrative theoretical approach to multicultural and multiracial identity. In V. Benet-Martínez & Y.-Y. Hong

(Eds.), *Oxford library of psychology. The Oxford handbook of multicultural identity* (pp. 139-159). New York, NY, US: Oxford University Press.

Shih, M., Pittinsky, T. L., &Ambady, N. (1999). *Stereotype susceptibility: Identity salience and shifts in quantitative performance,* Psychological Science, 10, 80-83.

Sinha, D. (1988). Basic Indian values and behavior dispositions in the context of national development. In D. Sinha & H.S.R. Kao (Eds.), *Social Values and Development: Asian Perspective.* New Delhi: Sage.

Sinha, J. B. P., Sinha, T. N., Verma, J., & Sinha, R. B. N. (2001). Collectivism coexisting with individualism: an Indian scenario. *Asian Journal of Social Psychology, 4*(2), 133-145. doi:10.1111/j.1467-839x.2001.00081.x

Smith, E. R., Murphy, J., & Coats, S. (1999). Attachment to groups: Theory and management. *Journal of Personality and Social Psychology, 77*, 94-110. doi: 10.1037/0022-3514.77.1.94

Solis-Camara, P., & Fox, R. A. (1995). Parenting among mothers with young children in Mexico and the United States. *Journal of Social Psychology, 135*(5), 591–599.

Stewart, S. M., Bond, M. H., Zaman, R. M., McBride-Chang, C., Rao, N., Ho, L. M., & Fielding, R. (1999). Functional parenting in Pakistan. *International Journal of Behavioral Development, 23*(3), 747-770.

Suh, E. M., & Oishi, S. (2002). Subjective Well-Being Across Cultures. *Online Readings in Psychology and Culture, 10*(1). http://dx.doi.org/10.9707/2307-0919.1076

Tajfel, H., Billig, M. G., Bundy, R. P., & Flament, C. (1971). Social categorization and intergroup behaviour. *European Journal of Social Psychology, 1*(2), 149-178. doi:10.1002/ejsp.2420010202

Tajfel, H. (1978). The achievement of inter-group differ-entiation. In H. Tajfel (Ed.), *Differentiation between social groups* (pp. 77-100). London: Academic Press.

Terav, T., & Keltikangas, J. L. (1998). Social decision-makingstrategies among Finnish and Estonian adolescents.*Journal of Social Psychology, 138*(3), 381–391.

Ting-Toomey, S. (1991). Intimacy expressions in three cultures: France, Japan, and the United States. *International Journal of Intercultural Relations, 15,* 29-46.

Thornton, B. (1984). Defensive attribution of responsibility:Evidence for an arousal-based motivational bias. *Journal of Personality and Social Psychology, 46,* 721-734.

Townsend, S. S. M., Markus, H. R., &Bergsieker, H. B. (2009). My choice, your categories: The denial of multiracial identities. *Journal of Social Issues, 65*(1), 185-204.http://dx.doi.org/10.1111/j.1540-4560.2008.01594.x

Triandis, H. C. (1972). *The analysis of subjective culture,* NewYork: Wiley.

Triandis, H. C., Bontempo, R., Villareal, M. J., Asai, M., & Lucca, N. (1988). Individualism and collectivism: Cross-cultural perspectives on self-ingroup relationships. Journal of Personality and Social Psychology, 54(2), 323-338. doi:10.1037/0022-3514.54.2.323

Turner, R. N., & Crisp, R. J. (2010). Explaining the relationship between ingroup identification and intergroup bias following recategorization: A self-regulation theory analysis. *Group Processes & Intergroup Relations, 13*(2), 251-261. doi:10.1177/1368430209351702

Tripathi, R. C. (1988). Aligning development to values in India. In D. Sinha & H. S. R. Kao (Eds.), Social values and development: *Asian perspective*, New Delhi: Sage.

Turner, H. (1975). *Reappraisals of fascism*. New York: New Viewpoints.

Vandello, J., & Cohen, D. (2002). *Cultural themes associated with domestic violence against women: A cross-cultural analysis.* Manuscript submitted for publication.

Verkuyten, M. (2009). Self-esteem and multiculturalism: An examination among ethnic minority and majority groups in the Netherlands. *Journal of Research in Personality, 43*(3), 419-427.http://dx.doi.org/10.1016 /j.jrp. 2009.01.013

Wehrle, K., &Fasbender, U. (2019). Self-concept. In V. Zeigler-Hill & T. K. Shackelford (Eds.), *Encyclopedia of Personality and Individual Differences*. AG: Springer Nature Switzerland. doi:10.1007/978-3-319-28099-8_2001-1

Wheeler, L., Reis, H. T., & Bond, M. H. (1989). Collectivism and individualism in everyday social life: The middle kingdom and the melting pot. *Journal of Personality and Social Psychology, 57*(1), 79-86.

Wiley, S. &Deaux, K. (2010). The bicultural identity performance of immigrants. In A. E. Azzi, X. Chryssochoou, B. Klandermans and B. Simon (Eds.), *Identity and Participation in Culturally Diverse Societies* (pp. 49-68). Oxford: Wiley-Blackwell. doi:10.1002/9781444328158.ch3

Ye, D., Ng, Y. K., & Lian, Y. (2014). Culture and Happiness. *Social indicators research, 123*(2), 519-547.

Youniss, J., & Smollar, J. (1989). Adolescents' interpersonal relationships in social context. In T. J. Berndt & G. W.Ladd (Eds.), *Peer relationships in child development* (pp.300-316). New York: Wiley.

Zukow-Goldring, P. (1995). *Sibling interaction across cultures*. New York: Springer-Verlag.